नवसर्जन संस्कृति

PRGI No. GJHIN/25/A2786

# नवसर्जन संस्कृति

PUBLISHED HIINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 01
अंक : 231
दि. 25.05.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा


# कीव पर रूस का अब तक का सबसे बड़ा हमला, 600 ड्रोन और 90 मिसाइलों से दहला यूक्रेन, 4 की मौत और दर्जनों घायल

कीव। रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध में एक बार फिर हालात बेहद भयावह हो गए हैं। राजधानी कीव और आसपास के इलाकों पर रूस ने अब तक के सबसे बड़े और घातक हवाई हमलों में से एक को अंजाम दिया है, जिसमें एक साथ करीब 600 ड्रोन और 90 मिसाइलें दागी गईं। यूक्रेनी वायुसेना के अनुसार, इस हमले में खतरनाक ओरेशनिक हाइपरसोनिक मिसाइलों का भी इस्तेमाल किया गया, जिससे पूरे यूरोप में सुरक्षा चिंताएं और बढ़ गई हैं।

हमले के बाद राजधानी कीव में पूरे रात धमाकों की आवाजें गूंजती रहीं। कई रिहायशी इमारतें, स्कूल, दुकानें और सार्वजनिक ढांचे गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त हो गए। जगह-जगह आग लगने की घटनाएं सामने आईं, जिसके बाद राहत और बचाव दल को लगातार मलबा हटाने और आग बुझाने में जुटना पड़ा। स्थानीय प्रशासन के अनुसार कम से कम 4 लोगों की मौत हुई है, जबकि 80 से अधिक लोग घायल बताए जा रहे हैं। विटाली क्लिट्स्को ने इस हमले को "शहर के लिए बेहद डरावनी रात" बताया। उन्होंने कहा कि पूरी रात लगातार विस्फोटों की आवाजें सुनाई देती रहीं और कई इलाकों में लोग सुरक्षित स्थानों की ओर भागते रहे। अस्पतालों में घायलों की भीड़ बढ़ गई है और मेडिकल टीमें लगातार राहत कार्य में जुटी हुई हैं।

यूक्रेन के अधिकारियों के मुताबिक, रूस ने इस हमले में ओरेशनिक नामक हाइपरसोनिक मिसाइल का भी इस्तेमाल किया, जिसे आधुनिक सैन्य तकनीक का बेहद घातक हथियार माना जाता है। यह मिसाइल परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम है और इसकी गति ध्वनि की गति से लगभग 10 गुना अधिक बताई

जाती है। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन पहले भी दावा कर चुके हैं कि इस मिसाइल को रोकना लगभग असंभव है। फरवरी 2022 में युद्ध शुरू होने के बाद यह तीसरी बार है जब इस प्रकार की मिसाइल का उपयोग किया गया है।

हमले का असर केवल कीव तक सीमित नहीं रहा। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने बताया कि रूस ने राजधानी से लगभग 64 किलोमीटर दूर स्थित बिला त्सेरकवा शहर को भी निशाना बनाया। उन्होंने आरोप लगाया कि रूस ने जल आपूर्ति और नागरिक ढांचे को नुकसान पहुंचाकर गर्मियों से पहले पानी की व्यवस्था को प्रभावित करने की कोशिश की है। जेलेंस्की ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय, विशेष रूप से अमेरिका और यूरोपीय देशों से रूस के खिलाफ और कड़े प्रतिबंध लगाने की मांग की है। रूस की ओर से इस हमले को जवाबी कार्रवाई बताया गया है। रूसी रक्षा अधिकारियों के अनुसार, यह हमला यूक्रेन द्वारा रूसी क्षेत्रों में किए गए हमलों के जवाब में किया गया। रूस का दावा है कि उसने यूक्रेन के सैन्य ठिकानों, एयरबेस और रणनीतिक ढांचों को निशाना बनाया। अधिकारियों ने यह भी कहा कि इस अभियान में ओरेशनिक के अलावा इस्कंदर, किंझाल और जिरकॉन जैसी अत्याधुनिक मिसाइलों का भी इस्तेमाल किया गया।

हमले के दौरान कीव में हालात इतने भयावह हो गए कि हजारों लोग जान बचाने के लिए मेट्रो स्टेशनों और भूमिगत शेल्टरों में शरण लेने को मजबूर हो गए। कई घंटे तक लोग भूमिगत सुरंगों में ही बैठे रहे, जबकि ऊपर शहर में धमाकों और आग का सिलसिला जारी रहा। सुबह होने पर शहर के कई हिस्सों में धुएं का गुबार, टूटे हुए मकान और बिखरा हुआ मलबा देखा गया। कई इमारतों की खिड़कियां टूट गईं और कुछ घरों का हिस्सा पूरी तरह ढह गया।

विशेषज्ञों का मानना है कि इतने बड़े पैमाने पर ड्रोन और मिसाइल हमले का इस्तेमाल युद्ध की दिशा और तीव्रता दोनों को बदल सकता है। ओरेशनिक जैसी हाइपरसोनिक तकनीक के इस्तेमाल ने वैश्विक सुरक्षा एजेंसियों की चिंता और बढ़ा दी है। कई देशों ने स्थिति पर नजर बनाए रखी है और संभावित कूटनीतिक प्रतिक्रिया की संभावना जताई जा रही है।

इस हमले ने एक बार फिर रूस-यूक्रेन युद्ध की भयावहता को दुनिया के सामने ला दिया है, जहां तकनीकी रूप से उन्नत हथियारों का इस्तेमाल आम नागरिकों के जीवन को सीधे प्रभावित कर रहा है और शांति की संभावनाएं लगातार कमजोर होती दिख रही हैं।

## अभिषेक बनर्जी के गढ़ फलता में भाजपा की ऐतिहासिक जीत, देबांग्शु पांडा ने बदला बंगाल का सियासी समीकरण

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की बहुचर्चित फलता विधानसभा सीट पर हुए दोबारा मतदान के नतीजों ने राज्य की राजनीति में बड़ा संदेश दिया है। लंबे समय से तृणमूल कांग्रेस का मजबूत गढ़ मानी जाने वाली इस सीट पर भारतीय जनता पार्टी ने ऐतिहासिक जीत दर्ज करते हुए राजनीतिक हलकों में हलचल मचा दी है। भाजपा उम्मीदवार देबांग्शु पांडा ने वाम मोर्चा समर्थित CPM उम्मीदवार शंभु नाथ कुर्मी को रिकॉर्ड मतों के अंतर से हराकर न केवल सीट पर कब्जा जमाया, बल्कि बंगाल की राजनीति में नए समीकरणों की चर्चा भी तेज कर दी।

फलता विधानसभा सीट को लंबे समय से अभिषेक बनर्जी और तृणमूल कांग्रेस का प्रभाव क्षेत्र माना जाता रहा है। ऐसे में इस सीट पर भाजपा की भारी जीत को केवल एक चुनावी नतीजा नहीं, बल्कि राजनीतिक संकेत के रूप में देखा जा रहा है। चुनाव परिणामों के अनुसार भाजपा उम्मीदवार देबांग्शु पांडा को कुल 1 लाख 49 हजार 666 वोट मिले, जबकि CPM उम्मीदवार शंभु नाथ कुर्मी को 40 हजार 645 वोट प्राप्त हुए। इस तरह भाजपा ने 1 लाख 9 हजार 21 वोटों के विशाल अंतर से जीत दर्ज की।

वहीं कांग्रेस उम्मीदवार अब्दुर रज्जाक मोल्ला तीसरे स्थान पर रहे और उन्हें 10 हजार 84 वोट मिले। तृणमूल कांग्रेस उम्मीदवार जहांगीर खान को मात्र 7 हजार 783 वोट ही प्राप्त हुए। खास बात यह रही कि दोबारा मतदान से पहले ही जहांगीर खान ने चुनाव लड़ने से इनकार कर दिया था, जिसके बाद यह मुकाबला और अधिक चर्चाओं में आ गया था।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि फलता जैसी महत्वपूर्ण सीट पर भाजपा की यह जीत पश्चिम बंगाल में बदलते राजनीतिक माहौल का संकेत मानी जा सकती है। पिछले कुछ वर्षों में भाजपा लगातार राज्य में अपने जनाधार को मजबूत करने की कोशिश कर रही है और इस जीत को उसी रणनीति की बड़ी सफलता माना जा रहा है।

दूसरी ओर, चुनाव परिणामों के बाद ममता बनर्जी ने चुनाव प्रक्रिया पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने फेसबुक लाइव के जरिए अपनी प्रतिक्रिया देते हुए दावा किया कि उनकी पार्टी को 220 से 230 सीटें मिलनी चाहिए थीं, लेकिन परिणाम बदल दिए गए। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग पर भरोसा करना मुश्किल हो गया है और मतदान प्रक्रिया में गड़बड़ी हुई है।

ममता बनर्जी ने आरोप लगाया कि कम से कम 150 सीटों पर "पासा पलट दिया गया।" उन्होंने कहा कि चुनाव के दौरान उनकी पार्टी के कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया और कई पार्टी कार्यालयों पर कार्रवाई की गई। मुख्यमंत्री ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि यदि वास्तव में निष्पक्ष जीत मिली होती, तो इस तरह का दबाव और कार्रवाई देखने को नहीं मिलती।

टीएमसी प्रमुख ने चुनाव आयोग से ईवीएम की पूरी रिपोर्ट सार्वजनिक करने की मांग भी की। उन्होंने कहा कि पार्टी चुनाव प्रक्रिया की पारदर्शिता को लेकर गंभीर सवाल उठा रही है और सभी तथ्यों की जानकारी चाहती है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि फिलहाल वे मीडिया से बातचीत नहीं करेंगी और भविष्य में अपनी बात सीधे फेसबुक लाइव के माध्यम से जनता तक पहुंचाएंगी।

फलता सीट का परिणाम इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि यह क्षेत्र तृणमूल कांग्रेस के प्रभाव वाले इलाकों में गिना जाता रहा है। ऐसे में भाजपा की यह बड़ी जीत विपक्षी दलों के लिए भी एक संकेत मानी जा रही है कि राज्य की राजनीति में मुकाबला अब और अधिक तीखा होने वाला है।

राजनीतिक विशेषज्ञों का कहना है कि इस चुनाव परिणाम ने बंगाल में भाजपा और तृणमूल कांग्रेस के बीच सीधी राजनीतिक लड़ाई को और तेज कर दिया है। भाजपा इस जीत को जनता के बदलते मूड और विकास आधारित राजनीति की स्वीकार्यता बता रही है, जबकि तृणमूल कांग्रेस चुनाव प्रक्रिया की निष्पक्षता पर सवाल उठा रही है।

फलता सीट पर भारी मतों से मिली जीत के बाद भाजपा कार्यकर्ताओं में उत्साह का माहौल देखा गया। कई स्थानों पर समर्थकों ने जश्न मनाया और इसे "ऐतिहासिक विजय" बताया। भाजपा नेताओं का कहना है कि यह जीत राज्य की जनता के बढ़ते विश्वास का परिणाम है।

## भारतीय वायुसेना की ताकत में इजाफा, 17 नए टेस्ट पायलट और फ्लाइट टेस्ट इंजीनियर तैयार

बेंगलुरु। भारतीय वायुसेना की तकनीकी और परिचालन क्षमता को नई मजबूती देते हुए एयर फोर्स टेस्ट पायलट स्कूल (AFTPS) ने 48वें फ्लाइट टेस्ट कोर्स के तहत 17 नए विशेषज्ञ अधिकारियों को तैयार किया है। इनमें 11 टेस्ट पायलट और 6 फ्लाइट टेस्ट इंजीनियर शामिल हैं, जिन्होंने 48 सप्ताह के अत्यंत कठिन और बहु-विषयक प्रशिक्षण को सफलतापूर्वक पूरा किया है।

यह प्रशिक्षण भारतीय वायुसेना के उन चुनिंदा कार्यक्रमों में से एक है, जिसे देश की सबसे चुनौतीपूर्ण और प्रतिष्ठित सैन्य ट्रेनिंग माना जाता है। इस बैच में कुल 17 अधिकारी शामिल थे, जिनमें भारतीय वायुसेना के 14 अधिकारी, भारतीय थलसेना का 1 अधिकारी और भारतीय नौसेना के 2 अधिकारी शामिल रहे। प्रशिक्षण पूरा करने के बाद ये सभी अधिकारी अब एयरक्राफ्ट एंड सिस्टम्स टेस्टिंग एस्टैब्लिशमेंट (ASTE) की एविएशन विंग में शामिल होंगे, जिसे भारतीय वायुसेना की सबसे अहम और तकनीकी रूप से उन्नत इकाइयों में गिना जाता है।

समारोह में एयर चीफ मार्शल एपी सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। वे स्वयं 17वें फ्लाइट टेस्ट कोर्स के पूर्व छात्र रह चुके हैं, जिससे यह समारोह और भी विशेष बन

गया। उन्होंने सभी प्रशिक्षु अधिकारियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए और उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले अधिकारियों को सम्मानित किया। एयर चीफ मार्शल ने अपने संबोधन में कहा कि आने वाले वर्षों में देश की रक्षा क्षमताओं के आधुनिकीकरण और स्वदेशी तकनीक के विकास में इन अधिकारियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होगी।

इस अवसर पर कई प्रतिष्ठित पुरस्कार भी प्रदान किए गए। बेस्ट ऑल-राउंड स्टूडेंट टेस्ट पायलट के लिए "सुरंजन दास ट्रॉफी" स्क्वाड्रन लीडर केके सिंह को दी गई। फ्लाइट इवैल्यूएशन में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए "चीफ ऑफ द एयर स्टाफ ट्रॉफी" स्क्वाड्रन लीडर आदित्य जमदग्नि को प्रदान की गई। वहीं फ्लाइट टेस्ट इंजीनियर श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए "महाराजा हनुमंत सिंह स्वॉर्ड" विंग कमांडर अभिनव कुमार को मिला। इसके अलावा "डनलप ट्रॉफी" विंग कमांडर प्रणव शर्मा को और ग्राउंड सब्जेक्ट्स में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए "कपिल भार्गव ट्रॉफी" स्क्वाड्रन लीडर पारस शर्मा को सम्मानित किया गया।

एयर चीफ मार्शल एपी सिंह ने अपने संबोधन में यह भी कहा कि भारत की रक्षा क्षमता को मजबूत बनाने के लिए आत्मनिर्भरता अब एक राष्ट्रीय आवश्यकता बन चुकी है। उन्होंने स्वदेशी रक्षा तकनीक और एयरोस्पेस इकोसिस्टम को और सशक्त बनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि टेस्ट पायलट और इंजीनियर केवल तकनीकी विशेषज्ञ ही नहीं होते, बल्कि वे उन महत्वपूर्ण कड़ियों में से एक हैं जो किसी भी विमान या रक्षा प्रणाली को डिजाइन से लेकर अंतिम तैनाती तक सुरक्षित और प्रभावी बनाने में भूमिका निभाते हैं।

उन्होंने अधिकारियों से अपील की कि वे अपने कार्य में उच्चतम मानकों का पालन करें और सुरक्षा, गुणवत्ता तथा तकनीकी सटीकता से कोई समझौता न करें। उनके अनुसार, आधुनिक युद्ध और रक्षा प्रणालियों के विकास में टेस्ट क्रू की भूमिका सबसे अहम होती है क्योंकि वही वास्तविक परिस्थितियों में उपकरणों की क्षमता और सीमाओं का मूल्यांकन करते हैं।

इस नए बैच के शामिल होने से भारतीय वायुसेना की तकनीकी परीक्षण क्षमता और भी मजबूत हो गई है। विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले समय में ये अधिकारी देश के लड़ाकू विमानों, हेलीकॉप्टरों और स्वदेशी रक्षा परियोजनाओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

यह कदम ऐसे समय में आया है जब भारत तेजी से अपनी रक्षा उत्पादन क्षमता को बढ़ाने और विदेशी निर्भरता कम करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। ऐसे में प्रशिक्षित टेस्ट पायलट और इंजीनियरों की यह नई टीम देश की एयरोस्पेस यात्रा को नई ऊंचाइयों तक ले जाने में अहम भूमिका निभा सकती है।

## 'कॉकरोच जनता पार्टी' विवाद सुप्रीम कोर्ट पहुंचा, फर्जी पहचान और डिजिटल अभियान पर उठे गंभीर सवाल

नई दिल्ली। सोशल मीडिया पर व्यंग्य, मीम्स और डिजिटल राजनीतिक अभियानों के जरिए तेजी से चर्चा में आई कथित 'कॉकरोच जनता पार्टी' (CJP) अब कानूनी और राजनीतिक विवाद के केंद्र में आ गई है। यह मामला अब देश की सर्वोच्च अदालत सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया तक पहुंच गया है, जहां एक याचिका दायर कर इस पूरे प्रकरण की स्वतंत्र जांच केंद्रीय जांच ब्यूरो यानी केंद्रीय जांच ब्यूरो (CBI) से कराने की मांग की गई है। याचिका में FIR दर्ज कर कथित रूप से जुड़े लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की अपील भी की गई है।

याचिका में गंभीर आरोप लगाते हुए कहा गया है कि CJP से जुड़े कुछ लोगों ने कथित तौर पर फर्जी लॉ डिग्री, दूसरे व्यक्तियों की पहचान और सुप्रीम कोर्ट की संस्थागत पहचान का दुरुपयोग किया। आरोप है कि कुछ व्यक्तियों ने स्वयं को वकील, कानूनी सलाहकार या न्यायिक प्रणाली से जुड़ा विशेषज्ञ बताकर सोशल मीडिया और अन्य मंचों पर लोगों को गुमराह किया। याचिकाकर्ता का दावा है कि इस तरह की गतिविधियां न केवल आम लोगों

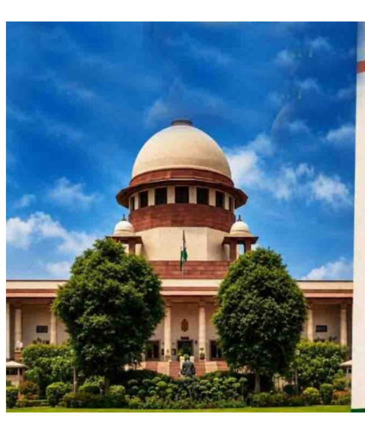

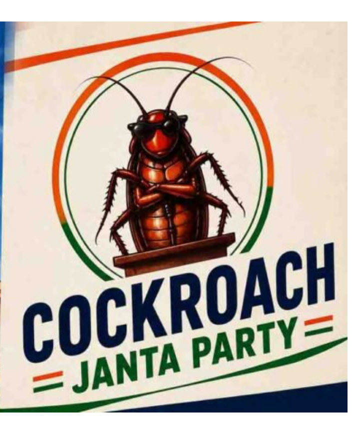


को भ्रमित करती हैं, बल्कि न्यायिक व्यवस्था की विश्वसनीयता और संस्थागत गरिमा को भी प्रभावित करती हैं।

याचिका में कहा गया है कि यदि किसी संगठन या डिजिटल अभियान से जुड़े लोग फर्जी दस्तावेजों और झूठी पहचान का उपयोग कर रहे हैं, तो यह केवल साइबर अपराध का मामला नहीं रह जाता, बल्कि यह न्यायिक और संवैधानिक संस्थाओं के दुरुपयोग का गंभीर विषय बन जाता है। इसी आधार पर मामले की निष्पक्ष और स्वतंत्र जांच की मांग की गई है। यह विवाद उस समय और अधिक चर्चा में आया जब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर 'कॉकरोच जनता पार्टी' से जुड़े पोस्ट, वीडियो और मीम्स तेजी से वायरल होने लगे। इंटरनेट पर यह अभियान व्यंग्यात्मक राजनीतिक अभिव्यक्ति के रूप में सामने आया, जिसे खासकर युवाओं के बीच काफी लोकप्रियता मिली। कई पोस्ट में व्यवस्था, राजनीति और सामाजिक मुद्दों पर कटाक्ष किए गए, जिसके बाद यह डिजिटल अभियान तेजी से ट्रेंड करने लगा। इसी दौरान न्यायपालिका और संस्थाओं पर सोशल मीडिया के जरिए बढ़ते हमलों को लेकर शीर्ष अदालत में की गई कुछ टिप्पणियों के बाद यह विवाद और गहरा गया। कानूनी हलकों में यह बहस तेज हो गई कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और संस्थागत मर्यादा के बीच संतुलन कैसे बनाए रखा जाए।

मामले ने नया मोड़ तब लिया जब केंद्र सरकार के निर्देश पर भारत में CJP का आधिकारिक 'X' (पूर्व ट्विटर) अकाउंट ब्लॉक कर दिया गया। यह कार्रवाई सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की धारा 69A के तहत की गई। सूत्रों के मुताबिक, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय को खुफिया एजेंसियों की ओर से ऐसी रिपोर्ट मिली थीं, जिनमें आरोप लगाया गया था कि संबंधित अकाउंट से कथित रूप से भड़काऊ सामग्री साझा की जा रही थी और कुछ पोस्ट देश की संप्रभुता तथा सार्वजनिक व्यवस्था को प्रभावित कर सकते थे। हालांकि सोशल मीडिया पर इस कार्रवाई को लेकर अलग-अलग प्रतिक्रियाएं देखने को मिलीं। कुछ लोगों ने इसे कानून और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा आवश्यक कदम बताया, जबकि कुछ यूजर्स ने इसे डिजिटल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर कार्रवाई के रूप में देखा। इंटरनेट पर इस विषय को लेकर बहस लगातार जारी है।

'कॉकरोच जनता पार्टी' को लेकर यह भी कहा जा रहा है कि इसकी शुरुआत कथित तौर पर बोस्टन यूनिवर्सिटी से जुड़े छात्र अभिजीत दिपके ने की थी। सोशल मीडिया पर यह अभियान व्यंग्य और राजनीतिक कटाक्ष के जरिए लोकप्रिय हुआ। अकाउंट ब्लॉक होने के बाद अभिजीत दिपके ने कथित तौर पर नया हैंडल 'Cockroach is Back' शुरू किया और समर्थकों से उससे जुड़ने की अपील की।

डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर मीम-आधारित राजनीतिक अभियानों का प्रभाव पिछले कुछ वर्षों में तेजी से बढ़ा है। युवा वर्ग विशेष रूप से ऐसे अभियानों से जुड़ता दिखाई देता है, जहां राजनीतिक या सामाजिक मुद्दों को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि जब इस तरह के अभियानों में फर्जी पहचान, गलत सूचना या संस्थागत प्रतीकों का दुरुपयोग शामिल होने लगे, तब मामला केवल अभिव्यक्ति का नहीं रह जाता और कानूनी जांच की आवश्यकता पैदा हो जाती है। कानूनी विशेषज्ञों के अनुसार यदि याचिका में लगाए गए आरोपों में तथ्य पाए जाते हैं, तो संबंधित लोगों के खिलाफ जालसाजी, पहचान छिपाने, साइबर अपराध और आपराधिक साजिश जैसी धाराओं के तहत कार्रवाई संभव हो सकती है। वहीं दूसरी ओर, कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि जांच निष्पक्ष और तथ्यों पर आधारित होनी चाहिए ताकि किसी भी प्रकार की राजनीतिक या वैचारिक व्याख्या से बचा जा सके। यह मामला ऐसे समय सामने आया है जब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स, डिजिटल अभियानों और ऑनलाइन राजनीतिक अभिव्यक्ति की भूमिका लगातार बढ़ती जा रही है। इंटरनेट ने जहां आम लोगों को अपनी बात रखने का बड़ा मंच दिया है, वहीं फर्जी जानकारी, ट्रोलिंग और डिजिटल पहचान के दुरुपयोग जैसी चुनौतियां भी तेजी से सामने आई हैं। अब सबकी नजर सुप्रीम कोर्ट ऑफ India में होने वाली सुनवाई पर टिकी है। यह मामला आने वाले समय में डिजिटल अभिव्यक्ति, सोशल मीडिया जवाबदेही और संस्थागत मर्यादा से जुड़े कई बड़े सवालों पर नई बहस खड़ी कर सकता है।

## संपादकीय

# जब लोकतंत्र की दीवारों पर चढ़ गया कॉकरोच

दुनिया में कुछ जीव ऐसे होते हैं जिन्हें प्रकृति ने शायद केवल मनुष्य के अहंकार को तोड़ने के लिए बनाया है। कॉकरोच यानी तिलचट्टा उन्हीं में से एक है। मनुष्य चाहे जितनी ऊंची इमारतें बना ले, चाहे विज्ञान के नाम पर ब्रह्मांड की गहराइयों तक पहुंच जाए, लेकिन जैसे ही रसोई के कोने से एक तिलचट्टा निकलता है, सारी महानता हवा हो जाती है। लोग चीखते हैं, कुर्सियों पर चढ़ जाते हैं, चप्पलें फेंकते हैं और पूरा घर युद्धभूमि बन जाता है। यह दृश्य शायद प्रकृति का सबसे बड़ा व्यंग्य है कि पृथ्वी का स्वयंभू सबसे बुद्धिमान जीव एक छोटे-से कीड़े से डर जाता है। कॉकरोच की सबसे बड़ी ताकत उसका शरीर नहीं, उसकी जिद है। वह मिटने से इनकार करता है। लाख जहरीले स्प्रे छिड़किए, नालियां साफ कराइए, घर चमकाइए, लेकिन किसी न किसी कोने से वह फिर निकल आता है। ऐसा लगता है जैसे वह मनुष्य को यह याद दिलाने आता हो कि इस पृथ्वी पर केवल इंसानों का अधिकार नहीं है। विज्ञान ने उसे "सर्वाइवर" कहा, लेकिन आम आदमी के लिए वह अब भी गंदगी का चलता-फिरता प्रतीक है। फिर भी समय का खेल देखिए कि आज वही कॉकरोच इंटरनेट का सबसे बड़ा राजनीतिक प्रतीक बन चुका है। सोशल मीडिया ने उसे वह सम्मान दे दिया है जो शायद किसी दार्शनिक या वैज्ञानिक को भी न मिला हो। "कॉकरोच जनता पार्टी" का नाम सुनकर पहले तो लोग हंसे, फिर मीम्स बने, फिर बहसें शुरू हुईं और देखते ही देखते वह डिजिटल भीड़ की पहचान बन गई। यही आज के दौर की राजनीति है। यहां गंभीर विचारों से ज्यादा ताकत एक वायरल मजाक में होती है। दरअसल आज की राजनीति नारों से नहीं, प्रतिक्रियाओं से चलती है। किसी नेता का एक वाक्य, किसी न्यायाधीश की एक टिप्पणी या किसी अभिनेता का एक बयान रातोंरात लाखों लोगों की भावनाओं का केंद्र बन जाता है। सोशल मीडिया ने हर शब्द को बारूद बना दिया है। कोई बात निकलती है और तुरंत ट्रेंड बनने लगती है। लोग उसे मजाक में लेते हैं, फिर वही मजाक पहचान बन जाता है। कॉकरोच जनता पार्टी भी उसी डिजिटल मानसिकता की उपज है, जहां व्यंग्य ही नया आंदोलन बन चुका है।

सबसे रोचक बात यह है कि लोग इस प्रतीक से खुद को जोड़ भी रहे हैं। शायद इसलिए कि कॉकरोच उस वर्ग का प्रतिनिधि लगता है जिसे हमेशा तुच्छ समझा गया, जिसे बार-बार कुचलने की कोशिश हुई, लेकिन जो हर बार लौट आया। समाज में ऐसे करोड़ों लोग हैं जिन्हें व्यवस्था महत्वहीन समझती है। वे अपने को उसी कॉकरोच की तरह देखते हैं जिसे मिटाने की कोशिशें तो बहुत होती हैं, लेकिन जो खत्म नहीं होता। इसीलिए तिलचट्टा अचानक "प्रतिरोध" का प्रतीक बन गया है।

इतिहास में भी अपमान के लिए कॉकरोच का इस्तेमाल होता रहा है। तानाशाह अपने विरोधियों को इंसान नहीं, कॉकरोच कहा करते थे ताकि उन्हें कुचलना आसान लगे। लेकिन इतिहास का सबसे दिलचस्प पहलू यही है कि तानाशाह मिट गए, उनकी मूर्तियां टूट गईं, उनके साम्राज्य धूल में मिल गए, मगर कॉकरोच आज भी जीवित है। यह जीव शायद प्रकृति का सबसे बड़ा व्यंग्यकार है। वह बिना कुछ बोले मनुष्य की सारी महानता पर हंसता रहता है। अब तो राजनीति में उसका विस्तार भी होने लगा है। कॉकरोच जनता पार्टी के जवाब में "पैरासाइट पार्टी" जैसी नई डिजिटल सेनाएं सामने आ रही हैं। यानी लोकतंत्र अब विचारधाराओं से ज्यादा जीव-जंतुओं की उपमाओं पर टिकने लगा है। ऐसा लगता है कि भविष्य की राजनीति संसद से कम और मीम पेजों से ज्यादा तय होगी। कल को "मच्छर मोर्चा", "दीमक दल" और "खटमल संगठन" भी आ जाएं तो किसी को आश्चर्य नहीं होगा। आखिर सोशल मीडिया का लोकतंत्र वही है जहां सबसे विचित्र चीज सबसे ज्यादा लोकप्रिय हो जाती है। इस पूरे घटनाक्रम में एक गहरी विडंबना छिपी है। मनुष्य ने हजारों साल की सभ्यता बनाई ताकि वह खुद को प्रकृति से ऊपर साबित कर सके। उसने धर्म बनाए, संविधान लिखे, दर्शन रचे और लोकतंत्र खड़ा किया। लेकिन अंत में उसकी राजनीति एक कॉकरोच के प्रतीक पर आकर टिक गई। यह केवल हास्य नहीं, बल्कि उस समाज की थकान का संकेत है जो गंभीर बहसों से ऊब चुका है। लोग अब विचारधाराओं में भरोसा नहीं ढूंढते, वे व्यंग्य में सच्चाई तलाशते हैं।

# देश की वैश्विक पहचान बनाने और जड़ों से जोड़ने में मिली है कामयाबी

> "हमारे देश के हर क्रांतिकारी और आजादी के नायकों ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पत्रकारिता को एक अस्त्र की तरह इस्तेमाल किया। लोकमान्य तिलक, विपिन चंद्र पाल, लाला लाजपत राय, सुभाषचंद्र बोस, महात्मा गांधी, माधवराव सप्रे, गणेशशंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी सबने पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्र को जागृत किया।

इन दिनों भारत की मीडिया में बंदिशों और लोकतंत्र के सिकुड़ते जाने की कथाएं हवा में तैर रही हैं। लोकतंत्र बचाने में वे सब आगे हैं जिनके शासन की कथाएं उन्हें खुद मुंह चिढ़ा रही हैं। मीडिया को दबाने, नियंत्रित करने की कहानियां आज की नहीं हैं। लेकिन मीडिया की हिम्मत भी आज की नहीं है। हमारे देश में पत्रकारिता की शुरुआत ही जेम्स आगस्टस हिकी की क्रांतिकारी लेखनी से प्रारंभ होती है, जिसने अंग्रेज लाट साहबों की बैंड बजा दी। अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध फूंककर उसने अंग्रेज होकर भी जेलें झेलीं, जुर्माने चुकाए और खामोश मौत पाई। किंतु हिकी यह बता गया कि पत्रकारिता क्यों और कैसे करनी है। इसके बाद आजादी के आंदोलन में यही पत्रकारिता 'खबर' की जगह 'पैगाम' देने वाली बन गयी। जिसके कारण शायर को कहना पड़ा कि जब तोप मुकाबिल तो अखबार निकालो। हमारे देश के हर क्रांतिकारी और आजादी के नायकों ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पत्रकारिता को एक अस्त्र की तरह इस्तेमाल किया। लोकमान्य तिलक, विपिन चंद्र पाल, लाला लाजपत राय, सुभाषचंद्र बोस, महात्मा गांधी, माधवराव सप्रे, गणेशशंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी सबने पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्र को जागृत किया। पत्रकारिता की भावभूमि आजादी के आंदोलन ने तय कर दी। वह थी जनपक्षधरता, न्याय के लिए संघर्ष और सत्यान्वेषण। आजादी के बाद देश के नवनिर्माण का काम हो या आपातकाल विरोधी संघर्ष हमारे पत्रकारों ने हर जगह अपने उजले पदचिन्ह छोड़े। आज मीडिया का स्वरूप बहुत व्यापक हो गया है। वह अनेक मंचों से की जा रही है। प्रिंट, टीवी, रेडियो से अलग मोबाइल पर हो रही पत्रकारिता गजब कर रही है। कहा जा रहा कि डिजिटल का सूरज कभी नहीं डूबता। इसलिए आप देखें तो पाएंगे मीडिया की पहुंच मोबाइल के माध्यम से ज्यादातर लोगों तक हो रही है। मीडिया कन्वर्जेंस का

माध्यम मोबाइल बने हैं। ऐसे में ज्यादातर चीजें सुनी और देखी जा रही हैं। पठनीयता के सामने गंभीर चुनौतियां हैं। फिर भी इतना बड़ा देश अगर कुछ प्रतिशत में भी पढ़ता है तो भी संख्या आसानी से करोड़ों में होती है। दुनिया के तमाम देश एक भाषा में सोचते, पढ़ते और बोलते हैं। हिंदुस्तान 22 बड़ी भाषाओं और तमाम बोलियों में सुनता, पढ़ता और देखता है। इसलिए भारत के मीडिया का आकार बहुत व्यापक है।

डिजिटल मीडिया ने हमारे माध्यमों को वैश्विक किया है। भारतीय भाषाओं को वैश्विक किया है। कभी फिल्में हमारे भारतीय समाज का वैश्विक चेहरा बनाती थीं। अब मीडिया इसके केंद्र में है। यू-ट्यूब,सोशल मीडिया, वेब माध्यमों , ई-पेपर और ई-बुक्स से एक नई दुनिया बन रही है, जिसने भारत की वैश्विक छवि बनाने का काम किया है। आज भारत और उसकी भाषाओं के साथ अंग्रेजी भाषा में भी भारतीयों की खास उपस्थिति है। वे जो लिख, कह और कर रहे हैं उसने देश को दुनिया में व्यक्त किया है। हिंदुस्तानी जहां-जहां गए अपनी भाषा और संस्कृति के साथ गए और वहां एक लघु भारत खड़ा किया। यह लघु भारत आज मीडिया और संचार माध्यमों से शक्ति पाता है। अपनी जड़ों से जुड़ा हुआ महसूस करता है। एक समय में अपनी भाषा के प्रकाशनों, पत्र-पत्रिकाओं, किताबों और मनोरंजन को प्राप्त करना मुश्किल था, किंतु डिजिटल माध्यमों ने इसे संभव किया है। दूरियां, भूगोल और भाषा सबके अंतर को पाटकर भारत आपके घर पहुंच जाता है। इससे भारत की शक्ति बन रही है। साफ्टपावर क्या कर सकती है, इसे हम सब महसूस कर रहे हैं।

एक नया भारत बनाने और उसके एकीकरण में भारतीय मीडिया की भूमिका को स्वीकार करना चाहिए। अपने प्रारंभ से ही उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम भारतीय पत्रकारिता और साहित्य का स्वर एक रहा है। सबने भारत बोध को स्वर दिया है। एकत्व को स्थापित किया है। जगदगुरु शंकराचार्य के बाद भारत के एकीकरण का काम पत्रकारिता और साहित्य ने ही किया है। अपने राष्ट्रीय विचारों के समाचार पत्र से तमिलनाडु के सुब्रम्यण्यम भारती जो कर रहे थे, वही काम हिंदी में माखनलाल चतुर्वेदी कर रहे थे। उनके साहित्य और पत्रकारिता दोनों में भारत बोलता है। इस तरह हम देखते हैं कि समाचार माध्यमों ने न सिर्फ सूचनाओं का आदान प्रदान किया बल्कि एक देश में एक भाव भी भरा। यही हमारी पत्रकारिता की मूल शक्ति है। पत्रकारिता के नायक लोकमान्य तिलक का वाक्य स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, देश की वाणी बन गया। देश ने आजादी के सपने देखने प्रारंभ किए। उनकी प्रेरणा से अनेक लोग पत्रकारिता में आए और उसी भाव को लेकर आगे बढ़े। इनमें हिंदी के माधवराव सप्रे का उदाहरण सबसे खास है, जिन्होंने तिलक जी के मराठी अखबार 'केसरी' से प्रेरणा लेकर 'हिंदी केसरी' प्रारंभ किया। ऐसे अनेक नायक देश को जोड़ने के सूत्र खोजकर पत्रकारिता के माध्यम से सामने आते रहे। समस्त भारतीय भाषाओं के श्रेष्ठ संपादकों ने इस दौर में जो भाव जागरण किया है, वह अप्रतिम है।

इतनी सारी भाषाओं, बोलियों, खानपान, स्थानीय प्रतीकों को लेकर चलता हुआ देश अगर एक है तो इसका कारण है, उसके सांस्कृतिक प्रवाह का एक होना। लंबी गुलामी, वैचारिक दासता से घिरे बुद्धिजीवियों द्वारा किए लंबे अनर्थ चिंतन के बाद भी इस देश की प्रज्ञा अगर सो नहीं गयी तो इसका कारण इस देश की गहरी सांस्कृतिक जड़ें हैं। समय-समय पर नायक आते रहे हैं। जो हमें याद दिलाते हैं कि सब कुछ कभी खत्म नहीं हो सकता। भारतेंदु हरिश्चंद्र उनमें एक हैं, गांधी हैं, बाद के दिनों में दीनदयाल उपाध्याय, डा. राममनोहर लोहिया, अटलबिहारी वाजपेयी हैं। इनमें से सब पत्रकारिता को अपनी अभिव्यक्ति का केंद्र बनाते हैं। मीडिया के माध्यम से समाज को उसके बोध से जोड़ते हैं। उसी समय समाज को राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त याद दिलाते हैं –

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी
आओ विचारें आज मिल कर, यह समस्याएं सभी।

जाहिर है हमारी चुनौतियां अभी समाप्त नहीं हुई हैं। हमें नित अपने राष्ट्र के समक्ष उपस्थित संकटों के ठोस और वाजिब हल तलाशने हैं। पत्रकारिता, साहित्य और प्रदर्शन कलाओं में यह सामर्थ्य है कि वे समाज को संबल देते हुए उन्हें एकजुट कर सकते हैं। उनको रास्ता दिखा सकते हैं। भारतीय पत्रकारिता कमोबेश अपनी इस भूमिका पर आज भी कायम है। अपनी इस भूमिका को और प्रखर करते हुए पत्रकारिता जगत को वह सब करना ही होगा, जो अपेक्षित है। इसकी कसौटी भी तय है- जनपक्ष और सत्यान्वेषण। इसी में भारतीय पत्रकारिता की मुक्ति है, इसी में उसका गौरव है।

## प्रेरणा

# स्मृतियों, मृत्यु और मनुष्य की भीतरी सुरंगों का आख्यान

समकालीन उर्दू साहित्य में कुछ ऐसे लेखक हैं जिन्होंने कथा को केवल घटनाओं के क्रम या मनोरंजन का माध्यम मानने से इंकार किया है। उन्होंने उपन्यास को मनुष्य के भीतर उतरने की एक जटिल प्रक्रिया में बदल दिया है। खालिद जावेद उन्हीं महत्वपूर्ण रचनाकारों में शामिल हैं, जिनकी रचनाएं पाठक को सहज कथा-सुख नहीं देतीं, बल्कि उसे अपने ही अस्तित्व के अंधेरे गलियारों में उतरने के लिए विवश करती हैं। उनका चर्चित उर्दू उपन्यास 'अरसलान और बहज़ाद' इसी प्रकार का एक गहन वैचारिक और मनोवैज्ञानिक आख्यान है, जिसका हिंदी अनुवाद इक़बाल हुसैन ने किया है। यह उपन्यास सामान्य अर्थों में कथा नहीं रचता, बल्कि चेतना, स्मृति, मृत्यु, अकेलेपन और आत्म की जटिल परतों को भाषा के माध्यम से उद्घाटित करता चलता है।

खालिद जावेद की रचनात्मकता का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि वह पारंपरिक कथानक पर भरोसा नहीं करते। उनके यहां कथा किसी बाहरी घटना से आगे नहीं बढ़ती, बल्कि पात्रों की मानसिक और अस्तित्वगत अवस्थाओं से निर्मित होती है। 'अरसलान और बहज़ाद' में भी यही विशेषता दिखाई देती है। यहां घटनाएं कम हैं, लेकिन अनुभवों की गहराई अधिक है। उपन्यास पढ़ते हुए ऐसा महसूस होता है मानो लेखक बाहरी संसार की बजाय मनुष्य के भीतर घट रही घटनाओं को दर्ज कर रहा हो। यही कारण है कि यह उपन्यास पाठक से केवल पढ़े जाने की अपेक्षा नहीं करता, बल्कि उसके भीतर उतरकर महसूस किए जाने की मांग करता है।

अरसलान और बहज़ाद दो पात्र अवश्य हैं, लेकिन धीरे-धीरे वे दो अलग-अलग व्यक्तित्व नहीं रह जाते। वे मानव चेतना के दो ध्रुवों की तरह सामने आते हैं। एक में स्मृति की बेचैनी है, दूसरे में वर्तमान का खालीपन; एक में जीवन की आकांक्षा है, दूसरे में मृत्यु का आकर्षण। उपन्यासकार इन दोनों पात्रों के माध्यम से आत्म और परायेपन के बीच मौजूद उस महीन रेखा को पहचानने की कोशिश करता है, जहां मनुष्य स्वयं को भी पूरी तरह नहीं समझ पाता। यही इस उपन्यास की सबसे बड़ी शक्ति है कि वह पात्रों को केवल व्यक्ति नहीं रहने देता, बल्कि उन्हें विचार और अनुभूति के प्रतीक में बदल देता है।

इस उपन्यास में मृत्यु केवल अंत नहीं है। वह जीवन को समझने का माध्यम बनकर उपस्थित होती है। खालिद जावेद मृत्यु को भयावहता की तरह नहीं, बल्कि एक ऐसी उपस्थिति की तरह देखते हैं जो मनुष्य को उसके अस्तित्व का बोध कराती है। यही कारण है कि उपन्यास में बार-बार स्मृतियां, अतीत, अकेलापन और अवचेतन की धुंध एक साथ उभरती है। पाठक को लगता है कि वह किसी ठोस यथार्थ में नहीं, बल्कि स्वप्न, स्मृति और अनुभव के मिश्रित संसार में प्रवेश कर चुका है। यही वह बिंदु है जहां यह उपन्यास उत्तर-आधुनिक जादुई यथार्थवाद की ओर बढ़ता दिखाई देता है।

खालिद जावेद की भाषा इस उपन्यास का सबसे महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण पक्ष है। उनकी भाषा सीधे अर्थ नहीं देती, बल्कि संकेतों, प्रतीकों और बिंबों के माध्यम से अर्थ रचती है। कई जगहों पर वाक्य कविता की तरह खुलते हैं और पाठक को अपने भीतर अर्थ खोजने के लिए बाध्य करते हैं। यही वजह है कि साधारण पाठकों को यह भाषा कठिन या असुविधाजनक लग सकती है। लेकिन वास्तव में यही कठिनता इस उपन्यास का सौंदर्यशास्त्र है। यह वह साहित्य नहीं है जिसे एक सांस में पढ़कर समाप्त कर दिया जाए; यह ऐसा पाठ है जो बार-बार लौटकर पढ़े जाने की मांग करता है।

उपन्यासकार का यह कथन कि "जो चीज आसानी से समझ आ जाए, उसे संदेह की नजर से देखना चाहिए", उनकी संपूर्ण रचनात्मक दृष्टि को स्पष्ट करता है। वह साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं मानते, बल्कि उसे एक बौद्धिक और संवेदनात्मक संघर्ष की तरह देखते हैं। इसलिए उनके यहां जटिलता केवल शैलीगत प्रयोग नहीं, बल्कि जीवन की जटिलताओं को व्यक्त करने का माध्यम है। जीवन स्वयं सरल नहीं है, इसलिए उसकी कलात्मक अभिव्यक्ति भी सहज और सपाट नहीं हो सकती।

इस संदर्भ में हिंदी अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। इक़बाल हुसैन ने इस कठिन और बहुस्तरीय भाषा को हिंदी में रूपांतरित करने का गंभीर प्रयास किया है। उर्दू की नफासत, उसकी काव्यात्मक लय और सांस्कृतिक गहराई को हिंदी में बनाए रखना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य है। हिंदी और उर्दू भले ही एक साझा सांस्कृतिक परंपरा से निकली भाषाएं हों, लेकिन दोनों की आत्मा और मुहावरे अलग-अलग अनुभव संसार रचते हैं। उर्दू की कोमलता और उसकी ध्वन्यात्मक सुंदरता को खड़ी हिंदी में पूरी तरह उतार पाना लगभग असंभव है। फिर भी अनुवादक ने मूल पाठ की संवेदना और वातावरण को बचाए रखने की उल्लेखनीय कोशिश की है।

यह अनुवाद केवल भाषाई रूपांतरण नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद का भी महत्वपूर्ण प्रयास है। हिंदी और उर्दू के बीच जो गंगा-जमुनी तहज़ीब विकसित हुई थी, उसका साहित्यिक रूप इस अनुवाद में दिखाई देता है। एक समय जवाहरलाल नेहरू ने जिस हिन्दुस्तानी भाषा की कल्पना की थी, उसमें हिंदी और उर्दू के बीच कोई दीवार नहीं थी। 'अरसलान और बहज़ाद' का हिंदी अनुवाद उसी साझा सांस्कृतिक विरासत की याद दिलाता है।

हालांकि कुछ स्थानों पर यह महसूस होता है कि उर्दू के सांस्कृतिक मुहावरे और उसकी अर्थ-बहुलता हिंदी में पूरी तरह स्थानांतरित नहीं हो पाई है। कई शब्द और बिंब ऐसे हैं जिनकी आत्मा भाषा विशेष में ही निहित रहती है। अनुवाद उन्हें अर्थ तो दे सकता है, लेकिन उनकी ध्वनि और सांस्कृतिक ताप को पूरी तरह नहीं बचा पाता। इसके बावजूद यह अनुवाद अपने स्तर पर एक सृजनात्मक पुनर्संरचना का काम करता है।

'अरसलान और बहज़ाद' दरअसल उन पाठकों के लिए लिखा गया उपन्यास है जो साहित्य को केवल कहानी नहीं, बल्कि विचार और अनुभव की यात्रा मानते हैं। यह उपन्यास पाठक को आसान निष्कर्ष नहीं देता। वह उसे बेचैन करता है, उसकी स्मृतियों को कुरेदता है और उसे अपने ही भीतर झांकने के लिए विवश करता है। यही किसी बड़े साहित्य की पहचान भी है कि वह पढ़े जाने के बाद समाप्त नहीं होता, बल्कि पाठक के भीतर लंबे समय तक जीवित रहता है। खालिद जावेद का यह उपन्यास भी उसी श्रेणी की कृति है, जो भाषा, विचार और संवेदना के स्तर पर हिंदी-उर्दू साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखता है।

# तपती धरती, झुलसता जीवन जनता के समक्ष हीटवेव की चुनौती

वर्ष 2026 की गर्मी केवल एक मौसमीय घटना नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के सामने खड़ी एक गंभीर चेतावनी बनकर सामने आई है। अप्रैल-मई के दौरान भारत सहित दक्षिण एशिया के अनेक हिस्सों में पड़ी रिकॉर्ड हीटवेव ने यह स्पष्ट कर दिया है कि जलवायु परिवर्तन अब भविष्य का संकट नहीं, वर्तमान की भयावह वास्तविकता है। दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और मध्य भारत के अनेक क्षेत्रों में तापमान 46 से 48 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। कई शहरों में बिजली की मांग ने रिकॉर्ड तोड़ दिए। सड़कें सूनी दिखने लगीं, श्रमिकों का श्रम ठहरने लगा और बच्चों, बुजुर्गों तथा गरीब तबकों के सामने जीवन बचाने की चुनौती खड़ी हो गई। यह संकट अचानक नहीं आया। यह दशकों से प्रकृति के साथ किए गए असंतुलित व्यवहार, अंधाधुंध शहरीकरण, जंगलों की कटाई, संसाधनों के दोहन और सुविधावादी जीवनशैली का परिणाम है। प्रकृति ने बार-बार संकेत दिए, लेकिन विकास की अंधी दौड़ में हमने उन संकेतों को अनसुना किया। आज वही उपेक्षित चेतावनियां लू बनकर हमारे सामने खड़ी हैं। हीटवेव का सबसे बड़ा कारण केवल बढ़ता तापमान नहीं, बल्कि वह विकास मॉडल है जिसने धरती की प्राकृतिक ढाल को कमजोर कर दिया। जंगल सदियों से पृथ्वी के प्राकृतिक एयर कंडीशनर रहे हैं। वे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं, वाष्पोत्सर्जन द्वारा वातावरण को शीतल रखते हैं और वर्षा चक्र को संतुलित बनाए रखते हैं। लेकिन विडंबना है कि विकास के नाम पर जंगलों का तेजी से विनाश हुआ। हर वर्ष लाखों हेक्टेयर वन क्षेत्र समाप्त हो रहे हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि स्थानीय स्तर पर तापमान बढ़ा, नमी कम हुई, वर्षा चक्र प्रभावित हुआ और गर्म हवाओं की अवधि लंबी होती गई। आज शहर "कंक्रीट के जंगल" बन चुके हैं। महानगरों में हरित क्षेत्र सिकुड़ते जा रहे हैं और उनकी जगह सीमेंट, डामर और शीशे की ऊंची इमारतें ले रही हैं। इससे "अर्बन हीट आइलैंड" प्रभाव तेजी से बढ़ा है। शहर अब आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कई डिग्री अधिक गर्म हो चुके हैं। कंक्रीट दिनभर सूर्य की ऊष्मा को सोखता है और रात में धीरे-धीरे छोड़ता है। परिणामस्वरूप रातें भी गर्म होती जा रही हैं और शरीर को राहत नहीं मिल पाती।

दिल्ली, मुंबई, जयपुर और लखनऊ जैसे शहरों में रात का तापमान पहले की तुलना में लगातार बढ़ रहा है। गरीब बस्तियों में स्थिति और भी गंभीर है। वहां न हरित क्षेत्र हैं, न पर्याप्त जल आपूर्ति, न शीतलन के साधन। टीन की छतों वाले घर दिन में भट्ठी बन जाते हैं। गर्मी की मार सामाजिक असमानता को और गहरा करती है। अमीर वर्ग एयर कंडीशनर और बंद कमरों में राहत खोज लेता है, लेकिन मजदूर, रिक्शाचालक, रेहड़ी वाले और निर्माण कार्य में लगे श्रमिक खुले आसमान के नीचे झुलसते रहते हैं। विडंबना यह भी है कि गर्मी से राहत का सबसे लोकप्रिय साधन एयर कंडीशनर स्वयं संकट को बढ़ाने वाला कारक बनता जा रहा है। एक एयर कंडीशनर कमरे को ठंडा करता है, लेकिन बाहर उतनी ही गर्म हवा छोड़ता है। इसके साथ ही बिजली की खपत बढ़ती है, जिसका बड़ा हिस्सा अभी भी कोयला आधारित ऊर्जा से आता है। रेफ्रिजरेंट गैसें अतिरिक्त ग्रीनहाउस प्रभाव पैदा करती हैं। इस प्रकार एक दुष्चक्र निर्मित हो गया है-गर्मी बढ़ती है, एसी बढ़ते हैं, उत्सर्जन बढ़ता है और फिर गर्मी और बढ़ जाती है।

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव केवल तापमान तक सीमित नहीं है। यह कृषि, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था पर भी व्यापक असर डाल रहा है। वैज्ञानिक अध्ययनों से संकेत मिले हैं कि बढ़ती गर्मी और अनिश्चित मौसम के कारण गेहूं, धान और अन्य फसलों की उत्पादकता प्रभावित हो रही है। गर्म हवाएं पौधों की वृद्धि रोकती हैं, जल स्रोतों को सुखाती हैं और मिट्टी की उर्वरता को प्रभावित करती हैं। यदि यही स्थिति बनी रही तो आने वाले वर्षों में खाद्य संकट भी गहरा सकता है। स्वास्थ्य क्षेत्र पर भी इसका गंभीर प्रभाव दिख रहा है। लू लगना, निर्जलीकरण, हीट स्ट्रोक, हृदय रोग और मानसिक तनाव जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं। अस्पतालों में गर्मी से जुड़ी बीमारियों के मरीजों की संख्या बढ़ रही है। सबसे अधिक खतरा बुजुर्गों, बच्चों, गर्भवती महिलाओं और बाहर काम करने वाले श्रमिकों को है।

गर्मी का यह संकट सामाजिक और मानवीय संकट भी बन सकता है। जल स्रोतों के सूखने, कृषि संकट और जीवन परिस्थितियों के बिगड़ने से बड़े पैमाने पर पलायन बढ़ सकता है। जैव विविधता पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ रहा है। अनेक जीव-जंतु और वनस्पतियां अपने प्राकृतिक आवास खो रही हैं। हजारों प्रजातियों के अस्तित्व पर संकट मंडरा रहा है। ऐसी स्थिति में सरकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। केवल रेड अलर्ट और ऑरेंज अलर्ट जारी करना पर्याप्त नहीं है। हीटवेव को राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन के प्रमुख विषय के रूप में स्वीकार करते हुए दीर्घकालिक नीतियां बनानी होंगी। सबसे पहले शहरों में हीट एक्शन प्लान को प्रभावी ढंग से लागू करना होगा। प्रत्येक शहर में हरित क्षेत्र बढ़ाने, जल संरक्षण, छायादार मार्ग, सार्वजनिक प्याऊ और शीतलन केंद्रों की व्यवस्था आवश्यक है। स्कूलों, कॉलेजों और कार्यस्थलों के समय निर्धारण में क्षेत्रीय तापमान को ध्यान में रखा जाना चाहिए। तीखी दोपहर में श्रमिकों के लिए कार्यावधि सीमित की जाए और उनके लिए विश्राम तथा पेयजल की व्यवस्था अनिवार्य हो।

सरकार को भवन निर्माण नीति में भी परिवर्तन लाना होगा। पारंपरिक भारतीय वास्तुकला-हवादार घर, आंगन, मिट्टी आधारित निर्माण, हरित छतें और प्राकृतिक वेंटिलेशन को बढ़ावा देना चाहिए। कांच की चमचमाती इमारतों और ऊष्मा अवशोषित करने वाले निर्माणों पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। "कूल रूफ" तकनीक, वर्षा जल संचयन और सौर ऊर्जा आधारित शीतलन प्रणाली को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। वन संरक्षण और वृक्षारोपण केवल अभियान नहीं, राष्ट्रीय प्राथमिकता बनना चाहिए।

## अभियान

# मां जानकी की कृपा से बदल सकता है जीवन, सुख-समृद्धि और सौभाग्य का दिव्य मार्ग है जानकी स्तोत्र

सनातन परंपरा में सीता को केवल भगवान श्रीराम की अर्धांगिनी के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि उन्हें त्याग, धैर्य, करुणा, पवित्रता और शक्ति की साक्षात प्रतिमूर्ति माना जाता है। मां जानकी भारतीय संस्कृति की उस दिव्य चेतना का प्रतीक हैं, जिसमें सहनशीलता के साथ आत्मबल भी है और कोमलता के भीतर अद्भुत तेज भी। यही कारण है कि माता सीता की उपासना को जीवन में शांति, सौभाग्य और मानसिक संतुलन प्रदान करने वाला माना गया है। धार्मिक मान्यता है कि जो व्यक्ति श्रद्धा और विश्वास के साथ जानकी स्तोत्र तथा श्री जानकी स्तुति का पाठ करता है, उसके जीवन से नकारात्मकता दूर होने लगती है और घर-परिवार में सुख, समृद्धि तथा प्रेम का वातावरण बनता है।

हिंदू धर्मग्रंथों में माता सीता को पृथ्वी पुत्री कहा गया है। वे धैर्य और मर्यादा की उस शक्ति का स्वरूप हैं, जो कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी सत्य और धर्म का मार्ग नहीं छोड़ती। वनवास का कठिन जीवन, रावण द्वारा हरण, अग्नि परीक्षा और समाज के कटु प्रश्नों के बावजूद माता सीता ने अपने आदर्शों को कभी नहीं छोड़ा। इसलिए उनकी उपासना केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि जीवन में धैर्य, संयम और आत्मविश्वास को जागृत करने का माध्यम भी मानी जाती है।

जानकी स्तोत्र को अत्यंत प्रभावशाली और पुण्यदायी स्त्रोत माना गया है। इसमें माता सीता के स्वरूप, उनकी पवित्रता, उनके तेज और भगवान श्रीराम के प्रति उनकी अटूट निष्ठा का वर्णन मिलता है। इस स्तोत्र का प्रत्येक श्लोक साधक के मन को शांति प्रदान करने वाला माना गया है। धार्मिक मान्यता के अनुसार जब कोई व्यक्ति श्रद्धा के साथ इस स्तोत्र का पाठ करता है, तब उसके भीतर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और मानसिक भय तथा अस्थिरता धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है।

विशेष रूप से विवाहित महिलाओं के लिए जानकी स्तोत्र का पाठ अत्यंत फलदायी माना गया है। कहा जाता है कि माता सीता अखंड सौभाग्य का आशीर्वाद प्रदान करती हैं। जो महिलाएं नियमित रूप से इस स्तोत्र का पाठ करती हैं, उनके वैवाहिक जीवन में प्रेम और मधुरता बनी रहती है। घर में पारिवारिक तनाव कम होता है और दांपत्य जीवन में विश्वास मजबूत होता है। भारतीय परंपरा में माता सीता को आदर्श पत्नी और आदर्श नारी के रूप में देखा जाता है, इसलिए उनकी आराधना को गृहस्थ जीवन के लिए विशेष मंगलकारी माना गया है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार जानकी स्तोत्र का पाठ आर्थिक समस्याओं को दूर करने में भी सहायक माना जाता है। यह विश्वास किया जाता है कि माता सीता की कृपा से घर में सुख-समृद्धि और धन-धान्य की वृद्धि होती है। दरिद्रता और अभाव दूर होने लगते हैं तथा परिवार में स्थिरता आती है। हालांकि सनातन धर्म यह भी सिखाता है कि केवल पाठ करने से नहीं, बल्कि अच्छे कर्म, सत्य और परिश्रम के साथ ईश्वर की आराधना करने से जीवन में वास्तविक परिवर्तन आता है।

आज के समय में मानसिक तनाव, असुरक्षा और भय से बहुत से लोग जूझ रहे हैं। ऐसे में जानकी स्तोत्र का पाठ मानसिक शांति प्रदान करने वाला माना गया है। जब व्यक्ति नियमित रूप से मंत्रों और स्तोत्रों का जाप करता है, तब उसका मन धीरे-धीरे एकाग्र होने लगता है। धार्मिक दृष्टि से इसे ईश्वरीय कृपा कहा जाता है, जबकि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह ध्यान और सकारात्मक चिंतन का प्रभाव भी माना जा सकता है। माता सीता की उपासना व्यक्ति के भीतर धैर्य और आत्मविश्वास को मजबूत करती है, जिससे कठिन परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति प्राप्त होती है।

जानकी स्तोत्र में माता सीता के तेजस्वी स्वरूप का अत्यंत सुंदर वर्णन मिलता है। इसमें उन्हें भगवान श्रीराम की प्रिय, करुणामयी और दिव्य शक्ति के रूप में स्मरण किया गया है। यह स्तोत्र केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि भक्त और देवी के बीच भावनात्मक संबंध स्थापित करने का माध्यम माना जाता है। जब भक्त श्रद्धा से इसका पाठ करता है, तब उसके भीतर भक्ति और समर्पण का भाव जागृत होता है।

श्री जानकी स्तुति भी माता सीता की महिमा का अत्यंत पवित्र वर्णन करती है। इसमें उन्हें पापों का नाश करने वाली, भक्तों की इच्छाओं को पूर्ण करने वाली और समस्त संसार की जननी कहा गया है। स्तुति में माता सीता को ज्ञान, करुणा, लक्ष्मी और शक्ति का स्वरूप माना गया है। धार्मिक मान्यता है कि इसका नियमित पाठ करने से व्यक्ति के जीवन में सकारात्मकता आती है और पारिवारिक सुख में वृद्धि होती है।

विशेष रूप से सीता नवमी के दिन जानकी स्तोत्र और श्री जानकी स्तुति का पाठ अत्यंत शुभ माना जाता है। यह दिन माता सीता के प्राकट्य दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर श्रद्धालु व्रत रखते हैं, माता सीता और भगवान श्रीराम की पूजा करते हैं तथा स्तोत्र और मंत्रों का जाप करते हैं। मान्यता है कि इस दिन श्रद्धा से की गई पूजा से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और जीवन में सुख-शांति आती है।

माता सीता की आराधना में कुछ मंत्रों का जाप भी विशेष महत्व रखता है। "श्री सीतायै नमः" को माता सीता का मूल मंत्र माना जाता है। यह छोटा लेकिन अत्यंत प्रभावशाली मंत्र माना गया है। वहीं "श्री जानकी रामाभ्यां नमः" मंत्र का जाप दांपत्य सुख और पारिवारिक शांति के लिए शुभ माना जाता है। इसके अलावा देवी सीता गायत्री मंत्र का जाप मन की शुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति के लिए किया जाता है—

"ॐ जनकाय विद्महे राम प्रियाय धीमहि।
तन्नो सीता प्रचोदयात्॥"

धार्मिक विद्वानों के अनुसार मंत्र जाप करते समय केवल उच्चारण ही महत्वपूर्ण नहीं होता, बल्कि श्रद्धा और मन की पवित्रता भी आवश्यक होती है। यदि व्यक्ति सच्चे मन से माता सीता का स्मरण करता है, तो उसे मानसिक संतोष और सकारात्मक ऊर्जा की अनुभूति हो सकती है।

सनातन संस्कृति में देवी-देवताओं की उपासना का उद्देश्य केवल सांसारिक लाभ प्राप्त करना नहीं, बल्कि आत्मिक उन्नति भी है। माता सीता की उपासना हमें यह सिखाती है कि जीवन में धैर्य, सत्य, करुणा और मर्यादा कितनी महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी अपने आत्मसम्मान और धर्म का त्याग नहीं किया। यही कारण है कि आज भी करोड़ों लोग उन्हें आदर्श नारी और शक्ति की प्रतीक मानकर पूजते हैं।

जानकी स्तोत्र और श्री जानकी स्तुति का महत्व केवल धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं है। यह व्यक्ति के भीतर सकारात्मक सोच, आत्मबल और मानसिक संतुलन को विकसित करने का माध्यम भी बन सकता है। जब कोई व्यक्ति प्रतिदिन कुछ समय ईश्वर स्मरण, ध्यान और मंत्र जाप में लगाता है, तब उसके मन में स्थिरता आने लगती है। यही स्थिरता जीवन की कठिन परिस्थितियों में उसे संभालने का कार्य करती है।

आधुनिक जीवन की भागदौड़ में जहां मनुष्य लगातार तनाव और अस्थिरता से घिरता जा रहा है, वहां माता सीता की आराधना आंतरिक शांति और संतुलन का मार्ग दिखाती है। उनकी करुणा, धैर्य और शक्ति का स्मरण व्यक्ति को यह प्रेरणा देता है कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, यदि मन में विश्वास और संयम बना रहे तो जीवन में आगे बढ़ा जा सकता है। यही कारण है कि जानकी स्तोत्र को केवल धार्मिक पाठ नहीं, बल्कि जीवन को सकारात्मक दिशा देने वाला आध्यात्मिक माध्यम भी माना जाता है।

PRGI NO. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004 (2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002 and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

# सूरत में शिक्षा और संस्कार का नया अध्याय 'जमनाबा विद्यार्थी भवन' बना हजारों सपनों का सहारा

सूरत। डायमंड सिटी और सिल्क सिटी के रूप में दुनिया भर में पहचान बना चुके सूरत शहर में शिक्षा, संस्कार और सामाजिक उत्थान की दिशा में एक और ऐतिहासिक कदम उठाया गया। श्री सौराष्ट्र पटेल सेवा समाज-सूरत द्वारा निर्मित अत्याधुनिक 'जमनाबा विद्यार्थी भवन' का भव्य उद्घाटन भूपेंद्र पटेल ने किया। इस अवसर पर शहर के राजनीतिक, सामाजिक, औद्योगिक और शैक्षणिक जगत की कई प्रमुख हस्तियां मौजूद रहीं। कार्यक्रम केवल एक भवन के उद्घाटन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह समाज की एकता, शिक्षा के प्रति समर्पण और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य निर्माण का प्रतीक बन गया।

सूरत के वालक पाटिया स्थित मणिबेन चौक पर निर्मित यह विशाल 'जमनाबा विद्यार्थी भवन' आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है। यहां करीब एक हजार विद्यार्थियों के रहने और पढ़ने की व्यवस्था की गई है। भवन में अत्याधुनिक एआई रिसर्च लैब, स्टेट-ऑफ-द-आर्ट लाइब्रेरी, अध्ययन कक्ष और संस्कारपूर्ण वातावरण उपलब्ध कराया गया है, ताकि ग्रामीण और दूर-दराज क्षेत्रों से आने वाले विद्यार्थी बेहतर शिक्षा के साथ सुरक्षित और पारिवारिक माहौल प्राप्त कर सकें।

उद्घाटन समारोह के दौरान हर्ष संघवी ने सरदार वल्लभभाई पटेल की 31 फुट ऊंची और 9 टन वजनी पंचधातु की प्रतिमा का अनावरण किया। समारोह में उपस्थित गणमान्य लोगों ने सरदार पटेल की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। भवन परिसर में स्थापित यह भव्य प्रतिमा युवाओं को राष्ट्रसेवा, एकता और समर्पण की प्रेरणा देने वाली मानी जा रही है।

कार्यक्रम के दौरान पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय केशुभाई पटेल के नाम पर बने ऑडिटोरियम का उद्घाटन केंद्रीय मंत्री मनसुखभाई मंडाविया और राज्यसभा सांसद गोविंदभाई ढोलकिया ने किया। वहीं भवन का औपचारिक उद्घाटन जयंतीभाई बाबरिया और अन्नपूर्णा धाम के चेयरमैन रवजीभाई वासानी ने रिबन काटकर किया।

अपने संबोधन में मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि अधिक मास जैसे पवित्र समय में समाजहित का कोई भी कार्य लाखों गुना फल देता है और सौराष्ट्र

पटेल सेवा समाज ने जनकल्याण के कार्यों के जरिए भगवान पुरुषोत्तम को प्रसन्न करने का सबसे बड़ा कार्य किया है। उन्होंने कहा कि यह संगठन इस बात का जीवंत उदाहरण है कि यदि समाज एकजुट होकर काम करे तो बड़े से बड़ा परिवर्तन संभव हो सकता है।

मुख्यमंत्री ने पाटीदार समाज के त्याग, सेवा और उदारता की सराहना करते हुए कहा कि यह समुदाय हमेशा देने की भावना के लिए जाना जाता रहा है। उन्होंने कहा कि आर्थिक कठिनाइयों के दौर में भी इस समाज ने जरूरतमंदों की मदद करने की परंपरा को जीवित रखा। उन्होंने कहा कि पाटीदार समाज ने केवल खेती तक खुद को सीमित नहीं रखा, बल्कि उद्योग, व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य और राजनीति तक हर क्षेत्र में नेतृत्व स्थापित किया है।

उन्होंने कहा कि पाटीदार उद्यमियों की मेहनत और दूरदर्शिता का ही परिणाम है कि आज सूरत पूरी दुनिया में 'डायमंड सिटी' के नाम से प्रसिद्ध है। हीरा उद्योग के साथ-साथ टेक्सटाइल, एम्ब्रॉयडरी और कंस्ट्रक्शन क्षेत्र में भी इस समाज ने उल्लेखनीय योगदान देकर सूरत को वैश्विक व्यापार केंद्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मुख्यमंत्री ने शिक्षा के महत्व पर विशेष जोर देते हुए कहा कि जिस समाज ने शिक्षा को प्राथमिकता दी, उसने हमेशा विकास और समृद्धि की नई ऊंचाइयों को छुआ है। उन्होंने कहा कि औद्योगिक जीवन और आधुनिकता के बीच भी इस समाज ने अपनी जड़ों, गांवों और सांस्कृतिक परंपराओं को जीवित रखा है। उन्होंने इसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'डेवलपमेंट थ्रू हेरिटेज' के विचार का उत्कृष्ट उदाहरण बताया। सौराष्ट्र पटेल सेवा समाज के 44 वर्षों के सामाजिक योगदान की चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि संगठन ने अब तक 67 सामूहिक विवाह आयोजित कर समाज में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा दिखाई है। इसके साथ ही पिछले 140 सप्ताह से लगातार चल रहे 'प्लांटिंग आइडियाज़' कार्यक्रम की भी उन्होंने प्रशंसा की और कहा कि यह समाज को सकारात्मक सोच की ओर ले जाने वाला अभिनव प्रयास है।

मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वर्ष 2047 तक 'विकसित भारत' और 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प का उल्लेख करते हुए लोगों से संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग की अपील की। उन्होंने कहा कि पेट्रोल, पानी, बिजली और सोने जैसी चीजों का समझदारी से उपयोग केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि राष्ट्रीय हित से भी जुड़ा हुआ है। उन्होंने विश्वास जताया कि सूरत और सौराष्ट्र पटेल सेवा समाज इस अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उपमुख्यमंत्री हर्ष संघवी ने अपने संबोधन में कहा कि 'जमनाबा विद्यार्थी भवन' ग्रामीण और दूरस्थ इलाकों से सूरत पढ़ने आने वाले छात्रों के लिए वरदान साबित होगा। उन्होंने कहा कि अब छात्रों को महंगे किराए के फ्लैटों में रहने की मजबूरी नहीं होगी, बल्कि वे यहां घर जैसे संस्कारपूर्ण वातावरण में रहकर अपने सपनों को साकार कर सकेंगे।

उन्होंने डिजिटल युग की चुनौतियों का जिक्र करते हुए कहा कि आज के समय में सामाजिक जागरूकता और पारिवारिक संस्कार बेहद जरूरी हैं। उन्होंने कहा कि यदि बच्चे मोबाइल और सोशल मीडिया में ज्यादा व्यस्त दिखें तो उन्हें डांटने के बजाय परिवार के बुजुर्गों को उन्हें समाज और संस्कृति से जोड़ने का प्रयास करना चाहिए।

महिला सुरक्षा पर बोलते हुए हर्ष संघवी ने कहा कि यदि कोई बेटी किसी असामाजिक तत्व के जाल में फंस जाती है तो समाज को उसकी आलोचना करने के बजाय उसका साथ देना चाहिए। उन्होंने कहा कि सामाजिक डर के कारण लोग कई घटनाओं को छिपा लेते हैं, जिससे अपराधियों का मनोबल बढ़ता है। समाज और प्रशासन को मिलकर ऐसे तत्वों के खिलाफ सख्ती से कार्रवाई करनी चाहिए। कार्यक्रम में सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा को विशेष आकर्षण का केंद्र माना गया। वक्ताओं ने कहा कि भवन के प्रवेश द्वार पर स्थापित यह प्रतिमा यहां रहने वाले युवाओं को देश, समाज और राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित करेगी। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा गुजरात में निर्मित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का भी उल्लेख किया गया और सरदार पटेल के विचारों को जीवित रखने के लिए उनका आभार व्यक्त किया गया। भव्य समारोह के दौरान समाज के दानदाताओं, ट्रस्टियों, उद्योगपतियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं का सम्मान भी किया गया। पूरे कार्यक्रम में शिक्षा, संस्कार, सामाजिक एकता और राष्ट्र निर्माण की भावना प्रमुख रूप से दिखाई दी। 'जमनाबा विद्यार्थी भवन' को केवल एक हॉस्टल नहीं, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के सपनों और संभावनाओं को आकार देने वाला केंद्र माना जा रहा है।

## गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल ने वंदे भारत एक्सप्रेस से किया सफर,यात्रियों से की आत्मीय बातचीत, कई यात्रियों ने मुख्यमंत्री के साथ ली सेल्फी

गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल ने आज दिनांक 24 मई, 2026 को गांधीनगर कैपिटल से सूरत तक अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त वंदे भारत एक्सप्रेस में यात्रा कर रेल यात्रियों को सुखद आश्चर्य दिया। इस अवसर पर माननीय केंद्रीय युवा मामले एवं खेल तथा श्रम एवं रोजगार मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने भी मुख्यमंत्री के साथ यात्रा की।

राज्य के मुखिया को अपने बीच एक सामान्य सह-यात्री के रूप में पाकर ट्रेन में सफर कर रहे यात्रियों में विशेष उत्साह एवं खुशी का वातावरण देखने को मिला। यात्रा के दौरान कई यात्रियों ने मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल के साथ सेल्फी ली तथा इस विशेष अवसर को अपने मोबाइल कैमरों में कैद किया। मुख्यमंत्री ने यात्रियों से आत्मीय संवाद स्थापित करते हुए उनकी यात्रा संबंधी अनुभूतियों को भी जाना।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा देशवासियों से सार्वजनिक परिवहन के अधिकाधिक उपयोग की गई अपील के अनुरूप मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल ने हवाई यात्रा के स्थान पर रेल यात्रा को प्राथमिकता दी। उन्होंने कहा कि रेलवे जैसे सार्वजनिक परिवहन के साधन न केवल

सुरक्षित, सुविधाजनक एवं पर्यावरण के अनुकूल हैं, बल्कि समय और ऊर्जा की भी बड़ी बचत करते हैं। उन्होंने नागरिकों से देश की प्रगति एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक से अधिक सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने का आग्रह किया।

मुख्यमंत्री ने वंदे भारत एक्सप्रेस की स्वच्छता, आधुनिक सुविधाओं तथा यात्रियों को प्रदान की जा रही सेवाओं की सराहना करते हुए कहा कि भारतीय रेल देश में तेज, सुरक्षित एवं विश्वस्तरीय यात्रा अनुभव उपलब्ध कराने की दिशा में निरंतर कार्य कर रही है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल की इस सहज एवं साधारण यात्रा ने आमजन के बीच सार्वजनिक परिवहन के प्रति सकारात्मक संदेश प्रसारित किया है तथा नागरिकों को अधिकाधिक सार्वजनिक परिवहन अपनाने के लिए प्रेरित किया है।

## पश्चिम रेलवे द्वारा अहमदाबाद पटना एवं अहमदाबाद–मुंबई सेंट्रल स्पेशल ट्रेनों के फेरे विस्तारित

पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा अतिरिक्त भीड़ को समायोजित करने के उद्देश्य से अहमदाबाद–पटना एवं अहमदाबाद–मुंबई सेंट्रल स्पेशल ट्रेनों के फेरों को विस्तारित करने का निर्णय लिया गया है। विस्तारित ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है :

ट्रेन संख्या 09447 अहमदाबाद - पटना स्पेशल जिसे 20 मई, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, उसे अब बढ़ाकर 27 मई, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 09448 पटना - अहमदाबाद साप्ताहिक स्पेशल जिसे 22 मई, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, उसे अब बढ़ाकर 29 मई, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 09088 अहमदाबाद - मुंबई सेंट्रल साप्ताहिक स्पेशल जिसे 28 मई, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, उसे अब बढ़ाकर 04 जून, 2026 से 30 जुलाई, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 09087 मुंबई सेंट्रल - अहमदाबाद साप्ताहिक स्पेशल जिसे 27 मई, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, उसे अब बढ़ाकर 03 जून, 2026 से 29 जुलाई, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 09447 एवं 09088 के विस्तारित फेरों की बुकिंग सभी पीआरएस काउंटरों तथा आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू है। ट्रेनों के ठहराव, संरचना एवं समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

## भारी बहुमत से रवि राज देसाई बने चैंबर उपाध्यक्ष व्यापारिक जगत ने जताया मजबूत भरोसा

सूरत। शहर के व्यापारिक और औद्योगिक जगत में लंबे समय से चर्चा का केंद्र बने चैंबर ऑफ कॉमर्स के उपाध्यक्ष पद के चुनाव में आखिरकार रवि राज देसाई ने शानदार और एकतरफा जीत दर्ज कर अपनी मजबूत पकड़ साबित कर दी। चुनाव परिणाम सामने आते ही व्यापारिक समुदाय में उत्साह का माहौल दिखाई दिया। भारी बहुमत से मिली इस जीत ने साफ संकेत दिया कि शहर के कारोबारी वर्ग और उद्योग जगत का बड़ा भरोसा रवि राज देसाई के पक्ष में रहा। वहीं उनके प्रतिद्वंद्वी नितिन भरूचा को करारी हार का सामना करना पड़ा और उनकी जमानत तक जब्त हो गई। चुनाव परिणामों के अनुसार उपाध्यक्ष पद के लिए कुल 2505 वोट डाले गए थे। इनमें से 18 मत रद्द घोषित किए गए, जिसके बाद 2486 वैध मतों की गणना की गई। मतगणना पूरी होने पर रवि राज देसाई को कुल 1887 वोट प्राप्त हुए, जबकि नितिन भरूचा को केवल 599 मत ही मिल सके। दोनों उम्मीदवारों के बीच वोटों का यह बड़ा अंतर चुनाव में रवि राज देसाई की मजबूत स्थिति और व्यापक समर्थन को दर्शाता है। चुनाव परिणाम घोषित होते ही चैंबर परिसर और व्यापारिक संगठनों के बीच जश्न जैसा माहौल बन गया। समर्थकों ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर जीत

का उत्सव मनाया। कई व्यापारियों और उद्योगपतियों ने इसे व्यापारिक समुदाय की एकजुटता और स्थिर नेतृत्व के पक्ष में दिया गया जनादेश बताया। सूत्रों के अनुसार चुनाव से पहले उपाध्यक्ष पद को लेकर लंबे समय तक अंदरूनी चर्चाएं चलती रहीं। व्यापारिक समुदाय के कई वरिष्ठ और प्रभावशाली सदस्यों के बीच विभिन्न नामों पर सहमति बनाने की कोशिश की गई थी। इस दौरान नितिन भरूचा और नवलोहिया जैसे नाम भी चर्चा में रहे। बताया जाता है कि संगठन के भीतर सभी पक्षों को साथ लेकर चलने वाला उम्मीदवार खोजने की कोशिश की जा रही थी, ताकि चुनाव में किसी प्रकार का बड़ा मतभेद सामने न आए। अंततः व्यापक सहमति और समर्थन के बाद रवि राज देसाई के नाम पर मुहर लगी। व्यापारिक जगत से जुड़े लोगों का कहना है कि रवि राज देसाई लंबे समय से व्यापारिक गतिविधियों और संगठनात्मक कार्यों में सक्रिय रहे हैं। यही वजह रही कि चुनाव में उन्हें छोटे व्यापारियों से लेकर बड़े उद्योग समूहों तक का समर्थन मिला। कई सदस्यों का मानना है कि उनकी कार्यशैली संतुलित और संवाद आधारित रही है, जिसके कारण वे विभिन्न व्यापारिक वर्गों के बीच स्वीकार्य चेहरा बनकर उभरे।

चुनाव के दौरान चैंबर के भीतर माहौल काफी सक्रिय और प्रतिस्पर्धी बना हुआ था। दोनों पक्षों ने अपने-अपने स्तर पर सदस्यों से संपर्क किया और समर्थन जुटाने की कोशिश की। हालांकि मतदान के बाद जिस तरह के परिणाम सामने आए, उसने यह स्पष्ट कर दिया कि व्यापारिक समुदाय का झुकाव बड़े पैमाने पर रवि राज देसाई के पक्ष में था। चुनाव परिणाम के बाद व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधियों, उद्योगपतियों और कारोबारियों ने रवि राज देसाई को बधाई दी। कई लोगों ने उम्मीद जताई कि उनके नेतृत्व में चैंबर ऑफ कॉमर्स की गतिविधियों को नई गति मिलेगी और व्यापारियों से जुड़े मुद्दों को अधिक प्रभावी तरीके से उठाया जाएगा। व्यापारिक समुदाय के कई सदस्यों ने कहा कि वर्तमान समय में उद्योग और व्यापार क्षेत्र कई चुनौतियों का सामना कर रहा है।

# केंद्रीय युवा मामले एवं खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने एसएआई एनसीओई गांधीनगर में एकीकृत खेल अवसंरचना सुविधाओं का उद्घाटन किया

▸▸ "नया भारत एक ऐसा खेल पारिस्थितिकी तंत्र बना रहा है जहाँ हर खिलाड़ी को बड़े सपने देखने और देश के लिए जीत हासिल करने का मौका मिलता है": डॉ. मनसुख मांडविया।

▸▸ "प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत में खेलों का विकास वैज्ञानिक प्रशिक्षण, आधुनिक बुनियादी ढांचे और खिलाड़ी-केंद्रित विकास से प्रेरित है": डॉ. मांडविया।

▸▸ केंद्रीय खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने साई एनसीओई गांधीनगर में राष्ट्रीय कोचिंग शिविर में भाग लेने वाले खिलाड़ियों से बातचीत की।

▸▸ "साई एनसीओई गांधीनगर भारत में पैरा खेलों के लिए एक प्रमुख उच्च-प्रदर्शन केंद्र के रूप में उभर रहा है": डॉ. मांडविया।

केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने आज एसएआईआई एनसीओई गांधीनगर में कई नई खेल अवसंरचना सुविधाओं का उद्घाटन किया, जो देश भर में विश्व स्तरीय उच्च प्रदर्शन वाले खेल पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के लिए सरकार की प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है।

मंत्री ने केंद्र में नवनिर्मित पैरा एथलीट छात्रावास, केंद्रीय भोजन कक्ष, शक्ति एवं कंडीशनिंग हॉल, बहुउद्देशीय प्रशिक्षण हॉल और ध्यान पार्क का उद्घाटन किया। प्रशिक्षण, पुनर्प्राप्ति, पोषण, खेल विज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य में एकीकृत सहायता प्रदान करके खिलाड़ियों की तैयारियों को मजबूत करने के लिए इन सुविधाओं का विकास किया गया है।

खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों और अधिकारियों को संबोधित करते हुए डॉ. मांडविया ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत का खेल तंत्र एक परिवर्तनकारी बदलाव से गुजर रहा है, जिसमें खिलाड़ी-केंद्रित विकास और समावेशी खेल अवसंरचना पर विशेष जोर दिया गया है।

मंत्री जी ने कहा, "प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी वास्तव में हमारे पैरा-एथलीटों के 'सर्वोत्तम मित्र' हैं। उनके नेतृत्व में भारत ने न केवल देश भर में खेल अवसंरचना का विस्तार किया है, बल्कि प्रत्येक पैरा-एथलीट के लिए सम्मान, सुलभता, मान्यता और समान अवसर भी सुनिश्चित किए हैं।"

वैश्विक खेलों में भारत के बढ़ते प्रभाव को रेखांकित करते हुए, डॉ. मांडविया ने बताया कि भारत ने एशियाई पैरा गेम्स में 111 पदक और पैरालंपिक 2024 में रिकॉर्ड 29 पदक जीते हैं, जो देश के तेजी से मजबूत होते खेल पारिस्थितिकी तंत्र को दर्शाता है।

उन्होंने टिप्पणी की, "हाल की अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में हमारा रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन कोई आकस्मिक उपलब्धि नहीं है। यह खिलाड़ियों में निरंतर निवेश, वैज्ञानिक प्रशिक्षण, आधुनिक बुनियादी ढांचे और इस दृढ़ विश्वास का परिणाम है कि भारत एक वैश्विक खेल महाशक्ति बन सकता है।"

मंत्री जी ने कहा कि एसएआई एनसीओई गांधीनगर, जिसे मंत्रालय द्वारा 'पैरा स्पोर्ट्स के लिए नोडल सेंटर' के रूप में अधिसूचित किया गया है, पैरा-एथलीटों के विकास के लिए देश के अग्रणी उच्च-प्रदर्शन केंद्रों में से एक के रूप में

उभर रहा है।

यह केंद्र वर्तमान में पैरा एथलेटिक्स, पैरा बैडमिंटन, पैरा टेबल टेनिस, पैरा पावरलिफ्टिंग, पैरा स्विमिंग और पैरा फेंसिंग सहित छह पैरा स्पोर्ट्स विधाओं को सहायता प्रदान करता है। सुविधाओं का उपयोग हैंडबॉल, कबड्डी और खो-खो के प्रशिक्षण के लिए भी किया जा रहा है।

डॉ. मांडविया ने कबड्डी, पैरा स्पोर्ट्स, वॉलीबॉल और बास्केटबॉल केंद्र में आयोजित राष्ट्रीय कोचिंग शिविरों में भाग लेने वाले खिलाड़ियों से भी बातचीत की। उन्होंने पाया कि उच्च स्तरीय प्रशिक्षण वातावरण और वैज्ञानिक सहायता प्रणालियों के निरंतर संपर्क से ओलंपिक और पैरालंपिक सहित भविष्य की अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक जीतने की भारत की संभावनाओं को मजबूती

मिलेगी।

मंत्री जी ने आगे कहा, "पैरा एथलीट हॉस्टल, स्ट्रेंथ एंड कंडीशनिंग हॉल और सेंट्रलाइज्ड डाइनिंग हॉल जैसी सुविधाएं सिर्फ इमारतें नहीं हैं; ये भारत के भावी चैंपियनों में निवेश हैं। ये एकीकृत उच्च-प्रदर्शन प्रणालियां आने वाले वर्षों में खेल के क्षेत्र में भारत की उत्कृष्टता की यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी।"

नवनिर्मित बहुउद्देशीय प्रशिक्षण हॉल का मुख्य रूप से कबड्डी प्रशिक्षण के लिए उपयोग किया जाएगा और इससे खिलाड़ियों को पूरे वर्ष उच्च स्तरीय अभ्यास, मैच सिमुलेशन और सामरिक तैयारियों में सुविधा मिलने की उम्मीद है। आधुनिक स्ट्रेंथ एंड कंडीशनिंग हॉल को वैज्ञानिक प्रशिक्षण विधियों के माध्यम से खिलाड़ियों के प्रदर्शन, सहनशक्ति, पुनर्प्राप्ति और चोट से बचाव को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

डॉ. मांडविया ने आगे बताया कि पैरा एथलीट छात्रावास और केंद्रीकृत भोजन कक्ष का विकास सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय की वित्तीय सहायता से किया गया है, जो समावेशी खेलों के विकास और पैरा-एथलीटों के कल्याण के प्रति भारत सरकार के एकीकृत दृष्टिकोण को दर्शाता है।

खिलाड़ियों के सर्वांगीण विकास के महत्व पर जोर देते हुए मंत्री ने कहा कि आधुनिक खेलों में उत्कृष्टता केवल शारीरिक तैयारी पर ही नहीं, बल्कि पोषण, मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन और विश्राम पर भी निर्भर करती है। उन्होंने कहा कि ध्यान पार्क और केंद्रीकृत भोजन कक्ष जैसी सुविधाएं खिलाड़ियों के लिए एक व्यापक उच्च-प्रदर्शन प्रणाली बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देंगी।

उद्घाटन समारोह में भारतीय खेल प्राधिकरण (एसएआई) के वरिष्ठ अधिकारी, कोच, खिलाड़ी और खेल जगत के सदस्य उपस्थित थे।

# फिट इंडिया संडेज़ ऑन साइकिल का 75वां संस्करण राष्ट्र को एकजुट करता है, अहमदाबाद राष्ट्रमंडल खेलों के दिवस के भव्य उत्सव में भारत का नेतृत्व करता है

▶▶ केंद्रीय खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने गुजरात के उपमुख्यमंत्री हर्ष संघवी और अभिनेता आयुष्मान खुराना के साथ राष्ट्रमंडल खेलों की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। साबरमती नदी तट पर हजारों लोग राष्ट्रमंडल खेल दिवस मनाने के लिए एकत्रित हुए। डॉ. मांडविया ने कहा,

▶▶ "साइकिल चलाना सिर्फ व्यायाम नहीं है, यह एक आंदोलन है। यह हमें फिट रखता है, प्रदूषण कम करता है और ईंधन बचाने में मदद करता है, साथ ही माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की ईंधन खपत कम करने की अपील के अनुरूप भी है।"

▶▶ अभिनेता आयुष्मान खुराना ने कहा, "माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की दूरदृष्टि और मार्गदर्शन में, 'संडे ऑन साइकिल' जैसी पहल भारतीय खेलों के भविष्य को आकार दे रही हैं।"

▶▶ फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल के 75वें संस्करण में आज देशभर में 8,000 से अधिक स्थानों पर भारी भागीदारी देखी गई, जो राष्ट्रमंडल खेल दिवस का प्रतीक है और अहमदाबाद में होने वाले ऐतिहासिक 2030 राष्ट्रमंडल खेलों की ओर गति प्रदान करता है।

अहमदाबाद के प्रतिष्ठित साबरमती रिवरफ्रंट से राष्ट्रीय समारोहों का नेतृत्व करते हुए , केंद्रीय युवा मामले और खेल एवं श्रम एवं रोजगार मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया , गुजरात के उपमुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी और बॉलीवुड अभिनेता आयुष्मान खुराना के साथ , 5,000 साइकिल चालकों , एथलीटों , युवा स्वयंसेवकों और फिटनेस के प्रति उत्साही लोगों के साथ सामुदायिक भागीदारी और खेल भावना के जीवंत प्रदर्शन में शामिल हुए ।

अहमदाबाद संस्करण , जिसका विषय " एक स्वस्थ भारत के लिए एक नया प्रतीक - 2030 तक पैडलिंग " था , में एक भव्य 5 किलोमीटर की साइकिल रैली के साथ-साथ योग और जुम्बा प्रदर्शन भी शामिल थे , जिसने साबरमती नदी तट को फिटनेस , संस्कृति और भारत के खेलों के विकास के उत्सव में बदल दिया ।

इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण डॉ. मांडविया द्वारा राष्ट्रमंडल खेलों पर आधारित एक विशेष प्रदर्शनी का उद्घाटन था , जिसमें भारत की खेल उपलब्धियों , खेलो इंडिया मिशन के तहत खेल अवसंरचना के विकास और 2030 में शताब्दी राष्ट्रमंडल खेलों की ओर अग्रसर देश के विस्तारित खेल पारिस्थितिकी तंत्र को प्रदर्शित किया गया ।

इस आयोजन में पिकलबॉल , बॉक्स क्रिकेट , वॉलीबॉल , रस्साकशी और कई इंटरैक्टिव सामुदायिक खेलों सहित कई रोमांचक गतिविधियां भी शामिल थीं , जिन्होंने सभी आयु वर्ग के प्रतिभागियों के लिए एक उत्सव जैसा माहौल बनाया ।

अभिनेता आयुष्मान खुराना , गुरजीत कौर, रजनी एतिमारपु , सोनिका तांडी , अंजुम मौदगिल , अंकुर मित्तल और तृप्ति मुर्गंडे सहित पूर्व राष्ट्रमंडल खेलों के पदक विजेताओं और ओलंपियनों में शामिल हुए , जिन्होंने युवा प्रतिभागियों को प्रेरित किया और भारत के युवाओं के बीच फिटनेस और खेल की बढ़ती संस्कृति को मजबूत किया ।

इस कार्यक्रम में कई प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्ति

और खेल जगत की हस्तियां भी शामिल हुईं, जिनमें भारतीय ओलंपिक संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अजय पटेल ; ओलंपिक निशानेबाज और चैंपियनशिप विश्व कप पदक विजेता गगन नारंग ; खेलो इंडिया के उप महानिदेशक और ओलंपियन श्री मयंक श्रीवास्तव और भारतीय एथलेटिक्स महासंघ के अध्यक्ष आदिल सुमारीवाला शामिल थे ।

इस आयोजन का एक विशेष सांस्कृतिक आकर्षण प्रसिद्ध कलाकार श्री अनीश रंगरेज द्वारा प्रस्तुत किया गया प्रदर्शन था, जिसमें उन्होंने गरबा की पारंपरिक भावना और योग के विज्ञान के अनूठे मिश्रण को प्रदर्शित किया ।

इसके अतिरिक्त , मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान के डॉ. पवन कुमार ने समग्र स्वास्थ्य और स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देने के लिए स्वास्थ्य परामर्श और मार्गदर्शन सत्रों के माध्यम से प्रतिभागियों को शामिल किया ।

2030 में होने वाले ऐतिहासिक शताब्दी राष्ट्रमंडल खेलों की व्यापक तैयारियों के तहत , युवा मामले और खेल मंत्रालय (MYAS) जनभागीदारी को गहरा करने और भारत के खेल पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के

लिए देश भर में भव्य , अंतःक्रियात्मक और समुदाय-संचालित पहलों का आयोजन जारी रखेगा ।

देशव्यापी उत्सव का उद्देश्य राष्ट्रमंडल खेलों के आंदोलन के बारे में अधिक जागरूकता पैदा करना और युवाओं को फिटनेस , खेल और सक्रिय जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित करना है, क्योंकि भारत 2030 में राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी करने की तैयारी कर रहा है ।

केंद्रीय युवा मामले, खेल और श्रम एवं रोजगार मंत्री डॉ. मांडविया ने कहा , " आज का दिन बहुत खास है क्योंकि हम फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल के 75वें संस्करण और राष्ट्रमंडल खेलों के दिवस दोनों का जश्न मना रहे हैं । मुझे गर्व है कि गुजरात 2030 में राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी करेगा , और इससे भी अधिक खुशी की बात यह है कि हजारों लोग सुबह-सुबह फिटनेस और राष्ट्र निर्माण के लिए एक साथ आ रहे हैं। "

" एक स्वस्थ समाज एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण कर सकता है । यदि हम वास्तव में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के विकसित भारत के सपने को साकार करना चाहते हैं , तो प्रत्येक नागरिक को फिटनेस और स्वस्थ जीवनशैली को प्राथमिकता देनी होगी । साइकिल चलाना केवल व्यायाम नहीं है , बल्कि एक आंदोलन है । यह हमें फिट रखता है , प्रदूषण कम करता है और ईंधन बचाने में मदद करता है , साथ ही माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की ईंधन खपत कम करने की अपील के अनुरूप भी है । अपने दैनिक जीवन में साइकिल को अपनाकर , चाहे वह कम दूरी के लिए ही क्यों न हो , हम एक स्वस्थ और अधिक टिकाऊ भारत के निर्माण में योगदान देते हैं ।"

गुजरात के उपमुख्यमंत्री हर्ष संघवी ने कहा , " आज अहमदाबाद शहर में 'फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल' कार्यक्रम के दौरान पूरी तरह से रौनक छा गई और गुजरात की जनता की इतनी जबरदस्त प्रतिक्रिया देखकर मैं बेहद खुश हूं । हजारों नागरिकों का सुबह-सुबह फिटनेस और खेलकूद के लिए बाहर निकलना स्वस्थ जीवनशैली के प्रति बढ़ती जागरूकता और उत्साह को दर्शाता है। "

अहमदाबाद में देखी गई व्यापक भागीदारी गुजरात में खेल और फिटनेस के प्रति बढ़ते उत्साह को भी दर्शाती है , जो भविष्य में प्रमुख अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजनों की मेजबानी करने के लिए राज्य की तत्परता को रेखांकित करती है ।

नागरिकों , खिलाड़ियों , युवा स्वयंसेवकों और फिटनेस के प्रति उत्साही लोगों की भारी संख्या में उपस्थिति ने इस क्षेत्र में खेल संस्कृति के तीव्र विकास को प्रदर्शित किया और 2030 राष्ट्रमंडल खेलों से पहले वैश्विक खेल प्रतियोगिताओं के लिए एक प्रमुख स्थल के रूप में अहमदाबाद के उभरने को मजबूत किया ।

अभिनेता और फिट इंडिया के प्रतीक आयुष्मान खुराना ने कहा , " आज यहां हर उम्र के लोगों को इतनी ऊर्जा के साथ आनंद लेते और भाग लेते देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है । फिट इंडिया और आगामी राष्ट्रमंडल खेल 2030 का यह जुड़ाव बहुत ही सुंदर है क्योंकि यह युवा भारतीयों में खेल संस्कृति को बढ़ावा दे रहा है । 'संडेज़ ऑन साइकिल' एक बहुत ही रोचक और दूरदर्शी पहल है ।"

" खेल सिर्फ पदक जीतने के बारे में नहीं है ; यह अनुशासन , त्याग और आकांक्षाओं को साकार करने के बारे में है । हर खिलाड़ी के पीछे पूरा परिवार त्याग करता है और उनके सपनों को साकार करने में सहयोग देता है । उनकी सफलता देश की सफलता बन जाती है । आज यहां भाग ले रहे बच्चों को देखकर मुझे पूरा विश्वास है कि भारत के कई भावी पदक विजेता हमारे बीच ही हैं । माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की दूरदृष्टि और मार्गदर्शन में ऐसी पहल भारतीय खेलों के भविष्य को आकार दे रही हैं ," उन्होंने आगे कहा ।

देश भर में , एसएआई क्षेत्रीय केंद्रों , राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्रों , खेलो इंडिया केंद्रों और सार्वजनिक स्थलों पर एक साथ इसी तरह के समारोह आयोजित किए गए , जिसमें ओलंपियन , राष्ट्रमंडल खेलों के पदक विजेता और खेल जगत की हस्तियां अपने-अपने क्षेत्रों में नागरिकों के साथ शामिल हुईं । माननीय केंद्रीय युवा मामले और खेल राज्य मंत्री श्रीमती रक्षा निखिल खडसे ने गुवाहाटी में समारोह का नेतृत्व किया , पूर्व कुश्ती स्टार बबीता फोगाट ने धर्मशाला में भाग लिया , जबकि पूर्व भारतीय हॉकी खिलाड़ी सबा अंजुम - जो प्रतिष्ठित फिल्म चक दे इंडिया की प्रेरणाओं में से एक थीं - मुंबई में उत्सव में शामिल हुईं , जिससे खेल में भागीदारी की राष्ट्रव्यापी भावना को बल मिला ।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा परिकल्पित फिट इंडिया मूवमेंट के तहत दिसंबर 2024 में लॉन्च होने के बाद से , फिट इंडिया संडेज़ ऑन साइकिल भारत की सबसे बड़ी समुदाय-संचालित फिटनेस पहलों में से एक के रूप में उभरी है , जो 3.07 लाख से अधिक स्थानों तक पहुंच चुकी है , 50 लाख से अधिक साइकिल चालकों को शामिल कर चुकी है और जमीनी स्तर के साथ-साथ डिजिटल साझेदारी के माध्यम से 7 करोड़ से अधिक भारतीयों से जुड़ चुकी है ।

युवा मामले और खेल मंत्रालय द्वारा साइक्लिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया (सीएफआई), योगासन भारत , रागगिरी फाउंडेशन , एमवाई बाइक्स और एमवाई भारत के सहयोग से आयोजित यह पहल, प्रधानमंत्री के " फिटनेस का डोज , आधा घंटा रोज " के विजन को और मजबूत करती है ।

जैसे-जैसे अहमदाबाद 2030 में ऐतिहासिक राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी की ओर बढ़ रहा है , आज का उत्सव एक ऐसे राष्ट्र की सशक्त याद दिलाता है जो एक स्वस्थ , मजबूत और अधिक महत्वाकांक्षी खेल भविष्य की ओर मिलकर साइकिल चला रहा है ।

# मध्य प्रदेश में लौट रही गिद्धों की दुनिया, ग्रीष्मकालीन गणना में मिले 10,742 वल्चर

मध्य प्रदेश। कभी विलुप्ति के कगार पर पहुंच चुके गिद्धों की संख्या में अब लगातार सुधार देखने को मिल रहा है। मध्य प्रदेश में हाल ही में संपन्न हुई तीन दिवसीय ग्रीष्मकालीन गिद्ध गणना में इस वर्ष कुल 10 हजार 742 गिद्ध दर्ज किए गए हैं। इनमें 9394 वयस्क और 1348 किशोर गिद्ध शामिल हैं। पिछले वर्ष की तुलना में इस बार करीब 1200 अधिक गिद्ध मिलने से वन विभाग और वन्यजीव विशेषज्ञों में उत्साह का माहौल है। इसे गिद्ध संरक्षण अभियान की बड़ी सफलता माना जा रहा है। वन विभाग द्वारा 22 से 24 मई तक प्रदेश के 16 वन वृत्तों, नौ टाइगर रिजर्व, राष्ट्रीय उद्यानों और अन्य संरक्षित क्षेत्रों में यह व्यापक गणना अभियान चलाया गया। आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए इस बार ऑनलाइन एप के माध्यम से डेटा संकलित किया गया। गणना के दौरान सूर्योदय से सुबह नौ बजे तक चयनित आवास स्थलों और घोंसलों पर बैठे गिद्धों की गिनती की गई। उड़ते हुए गिद्धों को इस प्रक्रिया में शामिल नहीं किया गया ताकि आंकड़ों की सटीकता बनी रहे।

इस अभियान में वन विभाग के अधिकारियों के साथ स्वयंसेवकों, पक्षी विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों और छात्रों ने भी सक्रिय भागीदारी निभाई। पूरे डेटा की निगरानी और संकलन के लिए वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में विशेष कंट्रोल रूम बनाया गया था। विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की व्यवस्थित और वैज्ञानिक गणना से गिद्धों की वास्तविक स्थिति समझने में मदद मिलती है और संरक्षण योजनाओं को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

प्रदेश में गिद्ध गणना की शुरुआत वर्ष 2016 में हुई थी। उस समय मध्य प्रदेश में कुल 7028 गिद्ध दर्ज किए गए थे। इसके बाद से हर वर्ष संख्या में धीरे-धीरे वृद्धि देखने को मिल रही है। इस वर्ष शीतकालीन गणना में 9509 गिद्ध मिले थे, जबकि ग्रीष्मकालीन गणना में यह आंकड़ा बढ़कर 10,742 तक पहुंच गया। वन विभाग के अनुसार यह संकेत है कि संरक्षण प्रयास सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

गणना के दौरान कई महत्वपूर्ण प्रजातियां भी दर्ज की गईं। इनमें भारतीय गिद्ध, सिनेरियस गिद्ध, मिस्र गिद्ध और हिमालयन ग्रिफॉन प्रमुख रूप से शामिल हैं। भारत में कुल नौ प्रजातियों के गिद्ध पाए जाते हैं, जिनमें से कई गंभीर संकट की श्रेणी में हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि संरक्षण कार्य इसी तरह जारी रहे तो आने वाले वर्षों में इनकी संख्या में और वृद्धि संभव है।

वन्यजीव विशेषज्ञों के अनुसार गिद्ध केवल एक पक्षी नहीं, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने वाली महत्वपूर्ण कड़ी हैं। वे प्राकृतिक सफाईकर्मी के रूप में काम करते हैं और मृत पशुओं को खाकर संक्रमण फैलने से रोकते हैं। 1990 के दशक में भारत में गिद्धों की आबादी में अचानक भारी गिरावट आई थी। वैज्ञानिकों ने इसके पीछे मुख्य कारण पशुओं में इस्तेमाल होने वाली डाइक्लोफेनाक दवा को माना, जिसके कारण लाखों गिद्धों की मौत हो गई थी।

भारत कभी दुनिया में गिद्धों की सबसे बड़ी आबादी वाला देश माना जाता था। 1980 और 1990 के दशक से पहले देश में करोड़ों गिद्ध मौजूद थे। लेकिन कुछ ही वर्षों में इनकी संख्या तेजी से घटकर बेहद कम रह गई। इसके बाद केंद्र और राज्य सरकारों ने संरक्षण अभियान शुरू किए, जिनका अब सकारात्मक परिणाम दिखाई देने लगा है।

भोपाल के केरवा क्षेत्र में वर्ष 2014 से गिद्ध संरक्षण और प्रजनन केंद्र संचालित किया जा रहा है। यहां गिद्धों के संरक्षण, उपचार और प्रजनन पर विशेष काम किया जा रहा है। इसके अलावा पन्ना, रायसेन, शिवपुरी और गांधीसागर अभयारण्य में भी संरक्षण गतिविधियां लगातार चलाई जा रही हैं। वन विहार में हरियाणा से लाए गए सफेद पीठ वाले गिद्धों के सफल प्रजनन ने भी इस अभियान को नई मजबूती दी है।

मध्य प्रदेश में सबसे अधिक गिद्ध पन्ना क्षेत्र में पाए जाते हैं। हालिया गणनाओं में भी पन्ना के जंगलों और टाइगर रिजर्व में सर्वाधिक गिद्ध दर्ज किए गए। शीतकालीन गणना के पहले चरण में अकेले पन्ना क्षेत्र में 2301 गिद्ध पाए गए थे, जिनमें साउथ पन्ना फॉरेस्ट डिवीजन में ही 1127 गिद्ध दर्ज किए गए। विशेषज्ञों का मानना है कि पन्ना का प्राकृतिक वातावरण और पर्याप्त भोजन उपलब्धता गिद्धों के लिए अनुकूल साबित हो रही है।

दुनिया में गिद्धों की कुल 23 प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें 16 प्रजातियां एशिया, अफ्रीका और यूरोप में पाई जाने वाली "ओल्ड वर्ल्ड वल्चर" श्रेणी में आती हैं, जबकि सात प्रजातियां उत्तर और दक्षिण अमेरिका में मिलने वाली "न्यू वर्ल्ड वल्चर" श्रेणी का हिस्सा हैं। हालांकि वैश्विक स्तर पर गिद्धों की कुल संख्या का सटीक संयुक्त आंकड़ा उपलब्ध नहीं है, क्योंकि हर प्रजाति की अलग-अलग गणना की जाती है।

# वडोदरा में समय पर फ्लैट का कब्जा न देने पर RERA का बड़ा फैसला, बिल्डर को ग्राहक को 9% ब्याज के साथ 40 लाख रुपये लौटाने का आदेश दिया गया

**(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।** गुजरात राज्य रियल एस्टेट नियामक प्राधिकरण (आरईआरए), जो रियल एस्टेट क्षेत्र में उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करता है, ने एक महत्वपूर्ण फैसला सुनाया है। आरईआरए ने उपभोक्ता के पक्ष में फैसला सुनाया है क्योंकि वडोदरा के सेवासी क्षेत्र में स्थित "प्रिया क्रॉस रोड्स" परियोजना के बिल्डर ने समय पर फ्लैट का कब्जा नहीं दिया था। आरईआरए प्राधिकरण के सदस्य डॉ. एम.डी. मोदिया की अध्यक्षता में हुई सुनवाई में, परियोजना के प्रमोटर, मेसर्स शिरिन इंफ्रास्ट्रक्चर को उपभोक्ता को 40 लाख रुपये की पूरी राशि 9% वार्षिक ब्याज सहित वापस करने का आदेश दिया गया है।

इस मामले के विवरण के अनुसार, शिकायतकर्ता रेशमा कनैयालाल अशनानी ने सेवासी गांव स्थित टीपी स्कीम नंबर-3 में "प्रिया क्रॉस रोड्स" योजना में फ्लैट नंबर बी-604 को 40 लाख रुपये में बुक किया था। 27 सितंबर 2024 को एक पंजीकृत बिक्री समझौता हुआ था। शिकायतकर्ता ने 5 लाख रुपये चेक के माध्यम से और शेष 35 लाख रुपये स्टेट बैंक ऑफ इंडिया से आवास ऋण के माध्यम से भुगतान किए थे।

समझौते के अनुसार, बिल्डर को 31 दिसंबर 2024 तक फ्लैट सौंपना था, लेकिन बिल्डर समय पर निर्माण अनुमति (BU) प्राप्त नहीं कर सका। अंततः, वडोदरा नगर निगम ने 11 दिसंबर 2025 को BU अनुमति प्रदान की। लंबे विलंब और निर्माण गुणवत्ता संबंधी समस्याओं के कारण, ग्राहक ने RERA अधिनियम की धारा 18(1) के तहत धन वापसी के लिए आवेदन किया। चूंकि इस मामले में बैंक ऋण शामिल है, इसलिए एक विशेष आदेश जारी किया गया है कि बिल्डर को 45 दिनों के भीतर शिकायतकर्ता के एसबीआई आवास ऋण खाते में सीधे 40 लाख रुपये और उस पर 9% ब्याज जमा करना होगा। बैंक को यह भी निर्देश दिया गया है कि

बकाया ऋण राशि को समायोजित करने के बाद अतिरिक्त राशि शिकायतकर्ता को वापस कर दी जाए।

आरईआरए के इस फैसले से यह स्पष्ट हो गया है कि जो बिल्डर ग्राहकों से पैसे लेकर समय पर फ्लैट का कब्ज़ा नहीं देते, वे अब अनुबंध की शर्तों का बहाना बनाकर जमा राशि जब्त नहीं कर सकेंगे। आरईआरए के इस सख्त रुख ने घर खरीदारों का भरोसा और भी मजबूत किया है।

इसे ही कहते हैं, "जागो, उपभोक्ता, जागो।" यही उपभोक्ता जागरूकता है।

# गुजरात के केसर आम की सुगंध से महका लंदन का हीथ्रो एयरपोर्ट : सात समंदर पार गुजरात के आम का दबदबा

▶▶ हॉट वाटर और हाइड्रो-कूलिंग जैसे आधुनिक ट्रीटमेंट के बाद ही विदेशी बाजारों में एंट्री, फ्रूट फ्लाई और रोगों के खत्म होने से बढ़ी शेल्फ लाइफ

▶▶ किसान अब स्वयं विदेश से डॉलर और पाउंड कमा सकते हैं, एफपीओ बनाओ और सरकारी सब्सिडी पाओ : समीर सापरिया, पैक हाउस के मालिक

गांधीनगर : "जब लंदन के हीथ्रो एयरपोर्ट पर गुजरात से आए केसर और हाफूस आम के बॉक्स उतरते हैं और उनकी सुगंध पूरे कार्गो एरिया में फैलती है, तब एक भारतीय के रूप में मुझे बहुत ज्यादा गर्व महसूस होता है। लंदन, लेस्टर और बर्मिंघम में रहने वाले गुजरातियों और भारतीयों के लिए यह केवल एक फल नहीं, बल्कि उनके वतन की मीठी याद और खुशबू है। लोग इसे मुंहमांगी कीमत पर खरीदने को तैयार होते हैं। अब तो यूरोपियन लोग भी 'इंडियन मैंगो' के दीवाने हो गए हैं।"

यह कहना है दिग्विजयसिंह गोहिल का, जो इंग्लैंड में आमों का आयात करते हैं और हर साल आम खरीदने के लिए स्वयं गुजरात आते हैं।

श्री गोहिल आगे बताते हैं कि हालांकि भारत सहित पूरी दुनिया में आम की अनेक किस्में मिलती हैं, लेकिन गुजरातियों और विदेशियों को केवल गुजरात का केसर आम और महाराष्ट्र का हाफूस ही अधिक पसंद है। केसर आम की मांग सबसे अधिक है। भारत के केसर और हाफूस आम जैसी सुगंध और मिठास पूरी दुनिया में कहीं और नहीं है। ब्राजील और पेरू जैसे दक्षिण अमेरिकी देशों के आम दिखने में तो सुर्ख लाल होते हैं, लेकिन उनका स्वाद काफी फीका होता है, जबकि भारत का केसर आम तो 'स्वाद का राजा' है।

वैज्ञानिक प्रक्रियाओं का पालन करने के बाद तैयार होता है 'ग्लोबल प्रोडक्ट'

कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीईडीए-एपीडा) से मान्यता प्राप्त आम के बागों और

मान्यता प्राप्त पैक हाउस में आम की प्रोसेसिंग करने के बाद ही उसका निर्यात किया जाता है।

राजकोट के कुवाड़वा स्थित एपीडा से मान्यता प्राप्त कुंज कोल्ड वेयर सॉल्यूशन-पैक हाउस के मालिक श्री समीर सापरिया ने बताया कि हम आम के निर्यात के लिए प्रोसेसिंग का काम अपने पैक हाउस में करते हैं। हम अमेरिका, इंग्लैंड, यूएई, ऑस्ट्रेलिया, यूरोपीय तथा खाड़ी के देशों की जरूरत के अनुसार आमों को प्रोसेस और पैक करते हैं।

अमेरिका को निर्यात करने के लिए हम विशेष प्रकार की हॉट वाटर प्रोसेस करते हैं, जिसे सबसे अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है। इंग्लैंड और कनाडा के लिए हॉट वाटर के अलावा राइपनिंग प्रोसेस करने के बाद उसकी पैकिंग की जाती है। हम केसर, राजापुरी और अल्फांसो (हाफूस) आम की भी प्रोसेसिंग करते हैं। केसर आम जूनागढ़, तालाळा और कच्छ से आते हैं, जबकि राजापुरी आम वलसाड से आते हैं।

### आम के ग्लोबल प्रोडक्ट बनने की प्रक्रिया : डी-सेपिंग से लेकर हाइड्रो-कूलिंग तक

बाग से निकला आम कैसे अंतरराष्ट्रीय स्तर का 'ग्लोबल प्रोडक्ट' बनता है, यह प्रक्रिया भी रोमांचक है।

डी-सेपिंग : जब आम ठीक तरह से पकने की अवस्था पर पहुंच जाते हैं, तब उन्हें सबेरे ठंडे वातावरण में तोड़कर पैक हाउस में लाने के बाद सबसे पहला काम डी-सेपिंग का होता है। आमों को स्पेशल कन्वेयर बेल्ट या ट्रे पर उल्टा रखा जाता है, ताकि डंठल का सारा रस निकल जाए। इससे आम काले नहीं पड़ते और लंबे समय तक खराब नहीं होते।

हॉट वाटर ट्रीटमेंट : हरे आमों को तोड़कर 48 से 52 डिग्री सेल्सियस तापमान वाले गर्म पानी में लगभग 10 मिनट तक डूबाकर रखा जाता है।

इस प्रोसेस से आम में होने वाला 'एन्थ्रेक्नोज' (एक रोग जिसमें आम पर काले धब्बे पड़ जाते हैं) और सड़न पैदा करने वाले फंगस खत्म हो जाते हैं, साथ ही फल मक्खी के अंडे और इल्ली मर जाते हैं। गर्म पानी के कारण आम के अंदर प्राकृतिक 'एथीलिन' गैस सक्रिय हो जाती है, जिससे सभी आम एक साथ और एक समान रूप से पकते हैं।

हाइड्रो-कूलिंग : गर्म पानी से निकाले गए आमों को 10 से 15 डिग्री सेल्सियस तक के तापमान वाले ठंडे पानी में 10 मिनट के लिए रखा जाता है। इसके बाद उन्हें हवा में अच्छी तरह से सुखाया जाता है। ठंडक के कारण आम की श्वसन दर (रेस्पिरेशन रेट) धीमी पड़ जाती है, जिससे आम लंबे समय तक ताजा रहता है, उसके छिलके सख्त रहते हैं और पकने के बाद उनका रंग बहुत ही आकर्षक और पीला दिखाई देता है।

"जब प्रोडक्ट में दम हो और उसे आधुनिक तकनीक का साथ मिले, तो दुनिया भर में प्रतिष्ठा हासिल की जा सकती है। गिर के बागों से निकला केसर आम आज एक वैश्विक ब्रांड बन चुका है।"

-समीर सापरिया, पैक हाउस ओनर

किसानों के लिए कमाई के नए क्षितिज : अब सीधे डॉलर और पाउंड कमाएं

किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) के माध्यम से किसान आम को स्वयं अपने तरीके से सीधे विदेश में निर्यात करके डॉलर और पाउंड में कमाई कर सकते हैं। यदि किसान अपना समूह या एफपीओ बनाकर एक समान उत्पादन और निर्यात करें, तो सरकार की ओर से विभिन्न प्रकार की सब्सिडी और सहायता दी जाती है। श्री सापरिया ने कहा कि इसके लिए यदि किसी किसान को मदद या मार्गदर्शन की जरूरत होगी, तो उन्हें पूरी मदद और मार्गदर्शन दिया जाएगा।

### आम के बाद अब सब्जियां भी विदेशों में मचाएंगी धूम

निर्यातकों के अनुसार, केवल आम ही नहीं, बल्कि 2026 के मानसून के बाद यानी आगामी सितंबर महीने से जी-फोर मिर्च, भिंडी, करेला, तोरई और गिलकी जैसी गुजरात की प्रीमियम सब्जियां भी इसी आधुनिक प्रोसेसिंग के साथ विदेशी बाजारों में भेजने का भव्य आयोजन किया गया है।